सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

• वर्ष : 15 • • अंक : 1 • • 5 अप्रेल 2018 (संयुक्तांक) • • मूल्य : 20 रु. •

बालोतरा प्रतिष्ठा की झलकियाँ

|| श्री आदिनाथाय नमः || || श्री मुनि सुव्रतस्वामिने नमः || || श्री पार्श्वनाथाय नमः ||

|| अनंतलब्धिनिधान श्री गौतम स्वामिने नमः ||

|| खरतरविरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

|| दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि-मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरि-श्री जिनकुशलसूरि-श्री जिनचंद्र सूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

|| पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ||

भावभरा आमंत्रण

भव्यातिभव्य

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

13 अप्रैल 2018 से 20 अप्रैल 2018 तक

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय (कटला मंदिर), अग्रवाल कॉलेज के पास, आगरा रोड, जयपुर

परम पावन निश्रा:

पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिन कीर्तिसागर सूरिश्वरजी म.सा.के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव, खरतरगच्छाधिपति, मरुधरमणि
आचार्य प्रवर श्री जिन मणिप्रभ सूरिश्वरजी म.सा. आदि गुरु भगवंत
पूज्या प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
साध्वी रत्ना सज्जनमणि प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद

महोत्सव मार्गदर्शक: अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त श्री मनोज कुमार बी. हरण

13 अप्रैल 2018
महोत्सव प्रारम्भ

18 अप्रैल 2018
परमात्मा की दीक्षा
का भव्य वरघोड़ा

20 अप्रैल 2018
द्वारोद्घाटन

वैशाख शुक्ला 4, गुरुवार 19 अप्रैल 2018

भव्य प्रतिष्ठा

निवेदक

श्री सुमति-कुशल-सज्जन सेवा ट्रस्ट
पालीताणा
वीरेन्द्र मल मेहता, अध्यक्ष
फतेहसिंह बरड़िया, महामंत्री

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ
जयपुर
प्रकाशचंद लोढ़ा, अध्यक्ष
ज्योति कोठारी, महामंत्री

सम्पर्क सूत्र: तिलोक चन्द गोलेछा 94149 62354, प्रवीण लोढ़ा 94140 69036

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

स-वक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीई भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं॥

– दशवैकालिक 6/22

वाक्यशुद्धि (भाषा की शुद्धि) को अच्छी तरह समझ कर मुनि दोषयुक्त वाणी का प्रयोग न करे। दोष रहित वाणी भी नपीतुली और सोचविचार कर बोलनेवाला मुनि, सत्पुरुषों में प्रशंसा को प्राप्त करता है।

Knowing fully well the importance of pure language a monk should always avoid evil language. Even while using such flawless language, he should speak only adequate and thoughtful speak only adequate and thoughtful words. Such monks are praised even by saints.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतीयाँ कथानाक भाग 3	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. हृदय के उद्‌गार	साध्वी विरागज्योति, सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. गौत्र परिचय	आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
6. संपूर्ण आनंद और शक्ति का मूलःधैर्य	साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म.	10
7. संघ-कल्याण के कर्णधार : आचार्य	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	12
8. महावीर का वीतराग दर्शन	डॉ. चंचलमल चोरड़िया	14
9. समाचार दर्शन	संकलन	07
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

वांचना शिविर

सभी के लिये

वांचना शिविर

ता. 1 जून से 5 जून 2018 तक
बाड़मेर कुशल वाटिका में
आप सभी अवश्य पधारें।

निवेदक
अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद्
केयुप

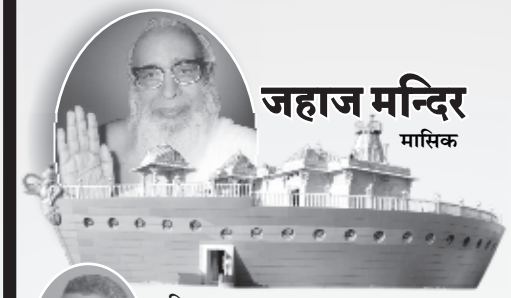

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 1 5 अप्रेल 2018(संयुक्तांक मार्च/अप्रेल) मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

जीवन परिचय के साथ प्रारंभ होता है और जीवन भर व्यक्ति अथवा पदार्थ परिचय की भूमिका में व्यक्ति जीता है।

पर अपने अन्तर में गहन चिंतन करना चाहिये इस विषय पर कि मुझे किसका परिचय करना चाहिये। और मैं किसका परिचय कर सकता हूँ!

हकीकत में मैं अपना ही परिचय कर सकता हूँ। किसी और का परिचय संभव नहीं है। होगा भी तो आधा अधूरा! किसी भी पर पदार्थ का परिचय पूर्णता के साथ नहीं हो सकता। उसके किसी एक पक्ष का ही परिचय होगा।

यह मेरा अहंकार बोलता है जब मैं ऐसी घोषणा करता हूँ कि मैं उस व्यक्ति या उस पदार्थ को बहुत अच्छी तरह पूर्ण रूप से जानता हूँ।

मैं उसके किसी एक समय के परिचय को अपने मानस में बिठा देता हूँ। और उसके बारें में वह परिचय मेरा पूर्वाग्रह बन जाता है। फिर मैं उसी चश्मे से उसे देखता हूँ।

जबकि हर व्यक्ति प्रतिपल बदल रहा है। मैंने जिस समय उसे देखा/जाना/परखा था। वह समय तो अतीत के कालखण्ड में समा गया। गंगा में बहुत पानी बह गया। घंटे भर पहले जो गंगा देखी थी, अभी वह नहीं है। पानी बदल गया। पर्याय बदल गई।

सच यह है कि मैं अपना ही परिचय पा सकता हूँ। क्योंकि मैं अपने पास ही सदा रहता हूँ। किसी और के पास मैं सदा नहीं रह सकता। कुछ पलों के कालखण्ड के लिये ही वह मेरा साथी हो सकता है। मैं ही मेरा सदा का साथी हूँ। पर मुश्किल यह है कि मैं अपना परिचय पाने का पुरूषार्थ नहीं करता।

अपना परिचय पाने के लिये मुझे दो और तत्वों का परिचय करना चाहिये।

कौन मेरा शत्रु है?

कौन मेरा मित्र है?

शत्रु की पहचान जरूरी है ताकि उनसे दूर रह सकूं।

मित्र को जानना जरूरी है ताकि उसका सहयोग पा सकूं।

'मेरा शत्रु' शब्द का अर्थ मेरे बाह्य नहीं, वरन् आंतरिक शत्रु है। मेरी आत्मा के शत्रु कौन है?मेरी सद्गति के शत्रु कौन है?

मेरी आत्मा के मित्र कौन है, जो मुझे अपनी आत्मा के दिव्य स्वरूप का परिचय करादे।

ये तीन ऐसे प्रश्न हैं, जो यदि हृदय की गहराई से उठते हैं तो उत्तर साथ में लाते हैं। बस! मुझे इतना ही करना है कि उन उत्तरों को अपने जीवन का आचार बना लेना है।

सोलह सतीयाँ
कथानक
3

विलक्षण वैराग्यवती सती सुन्दरी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

परमात्मा आदिदेव तक युगलिक परम्परा गतिमान थी। यौगलिक पद्धति यानि पुत्र-पुत्री का जन्म और उचित समय पर उसका पति-पत्नी में रूपान्तरित हो जाना।

ऋषभदेव के काल में युगलिक परम्परा लुप्त हो रही थी। एक युगल में से पति की अकस्मात् मृत्यु हो गयी। प्रश्न था कि अकेली नारी के जीवन का समुचित प्रबंध किस प्रकार किया जाये।

अन्ततोगत्वा उस नारी को सम्राट् ऋषभ ने समय का तकाजा और जीवन की व्यवस्था का सूत्र ध्यान में रखते हुए स्वीकार कर लिया।

प्रथम पत्नी सुमंगला ने भरत आदि निन्याणु पुत्रों का और दूसरी पत्नी सुनंदा से बाहुबली का प्रसव हुआ। ब्राह्मी भरत की और सुन्दरी बाहुबली की सगी बहन थी।

सम्राट् ऋषभ ने भरत को सुन्दरी और बाहुबली को ब्राह्मी सौंप दी, इस प्रकार युगादिदेव युगला धर्म निवारक के रूप में विख्यात हुए।

ब्राह्मी राज्य-साम्राज्य का त्याग कर आत्म-सिंहासन की दिशा में कदम बढ़ा चुकी थी, तब सुन्दरी का मन भी संयम के लिये लालायित हो उठा।

नहीं....नहीं....अब मुझे स्वार्थ से परमार्थ की महायात्रा का यात्री बनना है। कब तक जन्म-मरण की अंधेरी गलियों में योंहि अपने आपको छकाती रहूँगी।

सुन्दरी की आँखों से आँसू बह रहे थे और भरत कह रहा था-सुन्दरी! तेरे कदमों में मेरा सारा संसार न्यौंछावर है। तुम्हारा आदेश और मेरा कदम। बोलो, और क्या चाहिये सुखी होने के लिये।

तुम महारानी बनकर राज करोगी राज। ये महल, ये मणि-मुक्ता अलंकृत आभूषण तुम्हारे होंगे। हरे-भरे उद्यान के मध्य तालाब में जब तुम हंसिनी बनकर मुक्तमन से विचरण करोगी, तब जैसे विश्व की सारी खुशियाँ तुम्हारी प्यारी मुस्कानों में समा जायेगी।

सुन्दरी ने दृढ़ पर विनययुत् हो कहा-भरत! मैं इनकी सच में तो क्या, सपने में भी इच्छा नहीं करती।

नहीं चाहिये मुझे भृत्य वर्ग की कतारें।

नहीं चाहिये आकाश को छूते राजभवन!

ये सब संयम के सुखों के सामने वैसे ही तुच्छ और कान्तिहीन हैं, जैसे पारसमणि के सामने पत्थर।

मैं किसी और को दास बनाने की बजाय अपना मालिक बनना पसंद करती हूँ। गुलामी की दीवारों में जीने की अपेक्षा अनशन कर लेना श्रेयस्कर समझती हूँ।

पर तूं राजमहिषी बनेगी! शासन की सारी बागडोर तेरे हाथों में होगी और यह भरत तुम्हारी आँखों के सामने।

नरेन्द्र भरत! मैं राजमहिषी नहीं, आत्म-मनीषी बनना चाहती हूँ। फिर इन सम्बन्धों का क्या है! संसार के रंगमंच पर अनन्तकाल से जो नाटक चल रहा है, उसमें न कोई सार है, न कोई पार हैं। मुझे तो उसमें स्वार्थ, प्रपंच और धोखे की बूं आती है।

मेरा तो बस इतना ही कहना है कि मेरे क्षण व्यर्थ जा रहे हैं, अत: आप शीघ्र मेरे पथ को व्यवधान मुक्त कीजिये।

सुन्दरी बहुत रोयी, पर उसका रूदन अरण्य रूदन की भाँति सर्वथा व्यर्थ गया। भरत ने उसकी एक न सुनी।

पर सुन्दरी का निवेदन जीवन का जैसे नित्यक्रम बन चुका था।

रोज-रोज के इस निवेदन से भरत सकते में आ गया। वह समझ गया कि जल्दबाजी करना उचित नहीं है। समय जरूर मेरे पक्ष में होगा पर वहाँ तक धैर्य को जीवन्त रखना होगा।

वह सुन्दरी की सुव्यवस्था कर विश्व-विजय हेतु रवाना हो गया।

सुन्दरी ने सोचा-आखिर ऐसी कौनसी बात है, जिसको लेकर भैया भरत मुझे दीक्षा लेने से रोक रहे हैं।

बहिन ब्राह्मी को बाहुबली ने सहर्ष आज्ञा दे दी और मुझे निषेध आज्ञा।

क्या मुझमें पराक्रम और संकल्प का अभाव है या मैं चारित्र पालन में सबल नहीं हूँ।

ब्राह्मी-सा ही पराक्रम.....!

जिनाज्ञा के प्रति रोम-रोम से उछलता अहोभाव..!

कठोर चारित्र पालन के प्रति तीव्र उत्कंठा.....!

मुक्ति-स्पर्शन की अखूट झंखना.....!

ओह! निर्बलता अन्तर की नहीं, बाहर की है।

मेरा मनमोहक सौन्दर्य ही मेरी समस्या बन गया है। मेरे लावण्य के मोह में अटक कर भरत मुझे संयम की आज्ञा नहीं दे रहे हैं।

रास्ता साफ था और लक्ष्य स्पष्ट! सुन्दरी ने तुरन्त एक भीष्म प्रतिज्ञा की-मैं इस नश्वर रूप राशि को शाश्वत तप की अग्नि में भस्मीभूत कर दूंगी। आयम्बिल की मांगलिक तपस्या में वह अपने आपको तपाने लगी।

भरत सम्राट् दिग्विजय कर साठ हजार वर्षों बाद आये, तब तक भी सुन्दरी के तप का दीप और विराग की शिखा जरा भी मंद नहीं हुई थी।

सुन्दरी को देखने की ललक में वे तुरन्त अन्त:पुर में पहुँचे पर सुन्दरी अब सुन्दरी न रही। लम्बे, कड़े और उग्र तप में उसका सारा सौन्दर्य विलीन हो गया। जैसे अस्थि-पंजर एक ढांचा मात्र रह गया। न कोमलता रही, न कमनीयता। तेज कदमों से भरत सुन्दरी के कक्ष में पहुँचे पर पहचान न पाये। ऐसी हालत देखकर वे गद्‌गद् हो उठे।

साश्रुनयन बोले-सुन्दरी! यह तूंने क्या कर दिया?ऐसी कैसे हो गयी?

सुन्दरी करबद्ध हो बोली-सौन्दर्य और आसक्ति की कंटीली झाड़ियों के उन्मूलन का महाश्रम साठ हजार वर्ष पर्यन्त करने पर पीछे क्या बच सकता है, इस अशुचिमयी और नश्वर काया में! जिसको मिटना ही है, उसे मिटाकर अमिट को प्राप्त कर लूं तो इसमें हर्ज ही क्या है?

- पर तुम्हारा सौन्दर्य मुझे तीनों लोकों से प्यारा था।

- भैया! तुम्हें मेरे सौन्दर्य से लगाव था, मेरी भावनाओं से नहीं। जब सौन्दर्य ही नहीं रहा तो मोह के आवरण भी नहीं रहे। मैं जानती हूँ इस महामाया में

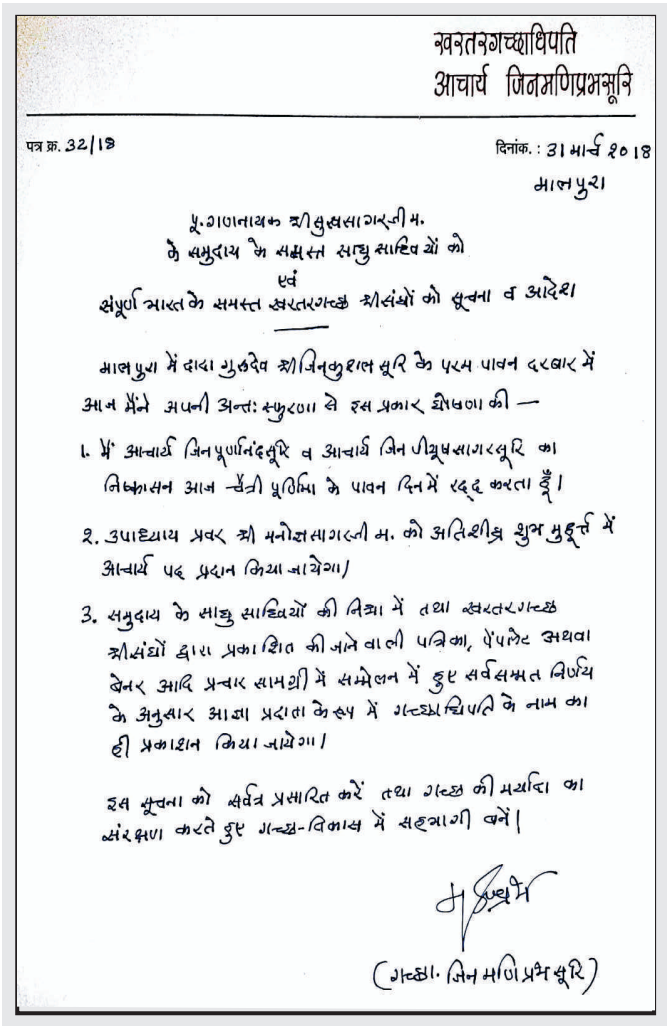

खरतरगच्छाधिपति
आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

पत्र क्र. 32/18 दिनांक. : 31 मार्च 2018
मालपुरा

पू.गणनायक श्रीसुखसागरजी म.
के समुदाय के समस्त साधु साध्वियों को
एवं
संपूर्ण भारत के समस्त खरतरगच्छ श्रीसंघों को सूचना व आदेश

मालपुरा में दादा गुरुदेव श्रीजिनकुशल सूरि के परम पावन दरबार में आज मैंने अपनी अन्तः स्फुरणा से इस प्रकार घोषणा की —

1. मैं आचार्य जिनपूर्णानंदसूरि व आचार्य जिन पीयूषसागरसूरि का निष्कासन आज चैत्री पूर्णिमा के पावन दिन में रद्द करता हूँ।

2. उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म. को अतिशीघ्र शुभ मुहूर्त्त में आचार्य पद प्रदान किया जायेगा।

3. समुदाय के साधु साध्वियों की निश्रा में तथा खरतरगच्छ श्रीसंघों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका, पेंपलेट अथवा बेनर आदि प्रचार सामग्री में सम्मेलन में हुए सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार आज्ञा प्रदाता के रूप में गच्छाधिपति के नाम का ही प्रकाशन किया जायेगा।

इस सूचना को सर्वत्र प्रसारित करें तथा गच्छ की मर्यादा का संरक्षण करते हुए गच्छ-विकास में सहभागी बनें।

(गच्छा. जिन मणिप्रभसूरि)

उलझकर ही हमने हजारों भव व्यर्थ किये हैं।

भरत का माथा झुका हुआ था। आँखें पश्चात्ताप के आँसूओं से भरी हुई थी। अपने किये पर गहरा अनुताप करते हुए भरत बोले-बहिन सुन्दरी! मैंने तुम्हारी भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया, इसलिये मैं तुम्हारा अपराधी हूँ। अपने भाई को क्षमा कर दो भगिनी!

सुन्दरी बोली-तुम मेरे नहीं, स्वयं के अपराधी हो। मेरे रूप के मोह में पागल होकर तुमने चारित्र मोहनीय कर्म बांधे हैं। चूंकि इसमें निमित्त मैं बनी, इसका मुझे अन्त:करण से दु:ख है।

भरत बोला-वास्तव में तुम्हारी भावनाएँ कितनी उदात्त और कल्याणकारिणी हैं। तुम छोटी होकर भी बड़ी हो। नारी होकर भी पूजनीया हो। तुम्हारा मन तुम्हारे तन से लाखों गुणा सुन्दर है।

(क्रमश:)

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. *के*
59वें जन्म दिवस पर...

हृदय के उद्गार

फिर एकबार वो दिन आया है
जिंदगी ने मुझे फिर वो मौका दिलाया है
आखिर जिसने जिंदगी जीना सिखाया है
आज उन्हीं का जन्म-दिन आया है...
वो कडकती धूप में छाया है
वो माँ और बाबा का साया है
आखिर यूं ही थोड़ी ग्रन्थों में एक गुरु को
भगवान से उंचा बताया है...
वो हमारी आंखों का तारा है
उन्होंने दूर किया हमारी जिंदगी से अंधियारा है
आज खुशी से मेरा मन भी भर आया है
हाँ हाँ आज मेरे गुरु का जन्म-दिन आया है....
उनका आशीष हमारे लिए जान से भी प्यारा है
खुशनसीब है हम कि हमें उन्होंने सहलाया है
आखिर उन्होंने ही तो हमें इस मुकाम पे पहुंचाया है
आज मेरे फरिश्ते का जन्म-दिन आया है
आज मेरे गुरु का जन्म-दिन आया है...
आपने जिनशासन के झंडे को फहराया है
कठिनाइयों से ना कभी आपका हृदय घबराया है
आपने गुरु के पद को चार चांद लगाया है
मेरा मन उल्लास से बधाईयां लाया है
आज मेरे गुरु का जन्म-दिन आया है...

दिव्यचरणरज
साध्वी विरागज्योतिश्रीजी विश्वज्योतिश्रीजी,
श्री जिनहरिविहार, पालीताना

58

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आचार्य जिनमणिप्रभ

सन् 1952 की घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ। सन् 1951 का चातुर्मास पालीताना में रणसी देवराज नामक धर्मशाला में किया था। यह चातुर्मास आराधना के अमृत आस्वादन के लक्ष्य से हुआ था। उस समय पालीताना का स्वरूप ही अलग था। पूज्य गुरुदेवश्री उस समय का वर्णन करते हुए फरमाते थे- तब आज की भांति बडी संख्या में चौके नहीं चला करते थे। कोई एकाध चौका रहा होगा। भोजनशाला व आयंबिल शाला थी। साधु साध्वियों का प्रवास भी बडी संख्या में नहीं होता था। पालीताना गांव में श्रावकों के 500 के आसपास घर थे। सब खुले थे। भाव भक्ति से परिपूर्ण थे। जो भी साधु साध्वी पधारते, वे प्राय: गांव के घरों में ही गोचरी हेतु पधारते थे और 42 दोष टाल कर आहार ग्रहण किया करते थे।

इस चातुर्मास में अपने गच्छ की समाचारी व परम्परा के अनुसार शत्रुंजय पर्वत की यात्रा कर दादा आदिनाथ के दर्शन किये थे। ऐसा करके यह संदेश दिया था कि चातुर्मास में गिरिराज की यात्रा करने में किसी भी प्रकार का दोष नहीं है। जब शिखरजी में चातुर्मास में यात्रा हो सकती है, तो पालीताना में क्यों नहीं! इस विषय में काफी ऊहापोह उस चातुर्मास में चला था।

चातुर्मास की पूर्णता के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री पालीताना से विहार कर मेडता रोड पधारे थे। और वहाँ पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की समाधि भूमि पर छतरी बनाई गई थी। उसमें आचार्यश्री के चरणों की प्रतिष्ठा का भव्य कार्यक्रम आयोजित था।

इस पावन अवसर पर पूज्य आचार्यश्री के समस्त शिष्य उपस्थित थे। पूज्य आचार्यश्री जिनकवीन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय), पूज्य गणिवर्य श्री हेमेन्द्रसागरजी म.सा., पूज्य गुरुदेवश्री, पूज्य मुनि श्री प्रेमसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म., पूज्य मुनि श्री तीर्थसागरजी म. आदि मुनिमंडल की पावन निश्रा में यह प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। यह प्रतिष्ठा वि. सं. 2008 फाल्गुन सुदि 3 गुरुवार

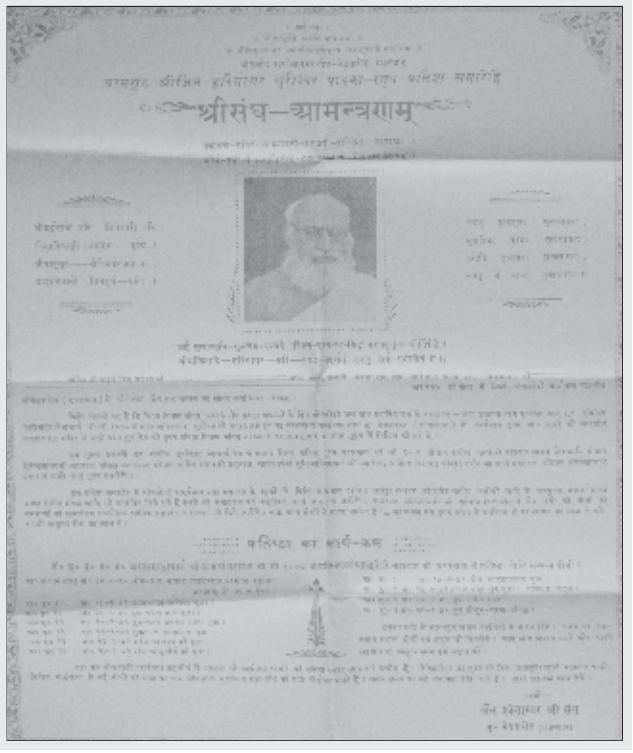

ता. 28 फरवरी 1952 के मंगल मुहूर्त्त में संपन्न हुई थी।

गुरु चरणों की प्रतिष्ठा के अवसर पर आसपास के समस्त श्री संघों व तीर्थों के ट्रस्टियों का विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया था। जिसमें गंभीरता के साथ बदलती राजनैतिक परिस्थितियाँ, धर्मस्थानों पर बढ़ता जाता सरकारी अंकुश आदि ज्वलंत विषयों पर विचार विमर्श किया गया था। साथ ही अपने प्राचीन तीर्थों, पुरातत्व के संरक्षण व विकास के संदर्भ में भी चर्चा की गई थी। प्रतिष्ठा समारोह का प्रारंभ 18 फरवरी से हुआ था। ग्यारह दिवसों तक पूजा भक्ति महोत्सव का भव्य आयोजन चला था। इन पूजाओं में एक दिन आबु तीर्थ की पूजा पढाई गई थी। पूजा का आयोजन आबू तीर्थ की महिमा का वर्णन प्रकट करता है साथ ही पूज्य गुरुवरों के हृदय का आबू तीर्थ के प्रति श्रद्धा भाव भी इससे प्रकट होता है।

इस प्रतिष्ठा के पश्चात् पूज्यश्री ने नागौर आदि क्षेत्रों में विहार कर बीकानेर चातुर्मास किया था।

गौत्र का इतिहास
10

झाबक/झांमड/झंबक गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभ

वि. सं. 1475 की यह घटना है। खरतरगच्छ के महान् प्रतापी श्रुत भण्डार संस्थापक आचार्य भगवंत श्री जिनभद्रसूरीश्वरजी म.सा. के सदुपदेश का परिणाम इस गोत्र की संरचना है।

राठौड वंश के राव चूडाजी चौदह पुत्र-पौत्रों में से एक झंबदे ने झाबुआ नगर बसाया। झंबदे के चार पुत्र थे। राजा झंबदे बूढ़ा हो गया था। उस समय दिल्ली के तत्कालीन बादशाह ने राजा झंबदे को फरमान भेजा कि तुम बहुत ही शक्तिशाली हो... शूरवीर हो...! उधर पास की घाटी में टांटिया नाम का भील हमारी आज्ञा नहीं मानता है और डाके डालता है। गुजरात की जनता को परेशान करता है, यात्रियों को लूटता है। उसे तथा उसके भाई को पकड कर दिल्ली लाना है। यह काम तुमको करना ही है। परिणाम स्वरूप तुम्हारा सादर बहुमान किया जायेगा।

राजा झंबदे विचार में पड गया। क्योंकि उसका शरीर वृद्ध अवस्था के कारण जर्जर हो रहा था। उसने अपने पुत्रों के साथ विचार विमर्श किया। सभी जानते थे कि टांटिया भील को पकडना कोई आसान काम नहीं है। बहुत चिंतन करने पर भी उनकी चिंता दूर नहीं हुई। बादशाह की आज्ञा की अवहेलना हो नहीं सकती थी और आज्ञा पालन में सामर्थ्य का अभाव नजर आ रहा था।

तभी दूसरे दिन राजा को समाचार मिले कि खरतरगच्छ के आचार्य भगवंत श्री जिनभद्रसूरीश्वरजी म.सा. का का नगर में प्रवेश होने वाला है।

आचार्य भगवंत के आगमन में उसे अपनी चिंता के निवारण का उपाय नजर आने लगा। क्योंकि उसने खरतरगच्छ के आचार्य भगवंतों की सिद्धि और साधना के चमत्कारों के बारे में अपने पूर्वजों से बहुत सुना था।

वह जानता था कि राठोड वंश पर इस गच्छ के आचार्यों का बहुत उपकार रहा है। राठोडों की ख्यात में कवि ने लिखा है-

गुरु खरतर प्रोहित सिवड रोहडियो वारट्ट।
कुल को मंगत दे दडो, राठोडा कुल भट्ट।।

दूसरे ही दिन उसने पूज्य गच्छाधिपति जैसलमेर आदि अनेक ज्ञानभंडारों के संस्थापक आचार्य भगवंत श्री जिनभद्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि चतुर्विध संघ का झाबुआ नगर में बडे महोत्सव के साथ नगर प्रवेश करवाया। जब राजा स्वयं अगवानी कर रहा था, तो प्रजा बडी संख्या में उमड पडी। शासन की अनूठी प्रभावना हुई।

गुरु महाराज का उपदेश सुना। पूज्यश्री के प्रवचन से राजा प्रभावित हुआ। दोपहर के समय में राजा ने अपनी समस्या गुरु महाराज के सामने प्रस्तुत करते हुए इस आफत से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की।

गुरु महाराज ने जिन धर्म का स्वरूप समझाते हुए धर्म आचरण की प्रेरणा दी। सिद्ध किया हुआ विजय यंत्र दिया। राजा ने पूर्ण रूप से आश्वस्त होकर अपने बडे लडके के गले में वह विजय यंत्र धारण करा दिया। वह युद्ध भूमि में जा पहुँचा और बिना जनहानि के ही विजयी होकर लौटा। टांटिया भील को पकडने में कामयाब रहा।

बादशाह ने प्रसन्न होकर सारा भील प्रदेश ही राजा को पुरस्कार में अर्पण कर दिया।

इस प्रकार सारे प्रदेश पर झाबुआ का शासन स्थापित हो गया।

राजा अपने पुत्रों को लेकर गुरु महाराज के पास पहुँचा। गुरु महाराज की साधना की सौरभ का उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव किया था। राजा ने अपने पुत्रों सहित गुरु महाराज की शरण स्वीकार कर ली। गुरु महाराज ने श्रावकत्व का बोध दिया। राजा के तीन पुत्रों झाबक, झांमड और झंबक ने जैन धर्म को स्वीकार कर लिया। गुरु महाराज ने उनके नाम से ही तीन गोत्रों की स्थापना कर ली।

चिंतनात्मक निबंध

संपूर्ण आनंद और शक्ति का मूल : धैर्य

महत्तरा दिव्य चरण रज साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी

जीवन में सुख और दु:ख की उपस्थिति मानव के उसके अपने कृत शुभाशुभ कर्मों के आधार पर है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन कर्मों से जुड़ा है। कर्म यदि शुभ है तो फल भी सुखद है और कर्म अशुभ किये जा रहे हैं तो उसका फल निश्चित रूप से कटु है। भगवान महावीर ने उद्घोष किया सुच्चिणा कम्मा सुच्चिणा फला, दुच्चिणा कम्मा, दुच्चिणा फला अर्थात् अच्छे कर्मों के परिणाम अच्छे होते हैं और बुरे कर्मों के परिणाम बुरे।

यह स्पष्ट है कि कोई भी ऐसा इस संसार में नहीं है जो यह चाहता हो कि मेरे जीवन में दु:ख आए। चाह सभी की यही होती है कि हर स्तर पर, हर प्रकार से मैं सुखमय जीवन व्यतीत करूं। केवल चाह से कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ करता, प्राप्ति के लिए तदनुसार प्रयत्न किये जाने अनिवार्य हैं।

कर्म-सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जीव क्षण-क्षण कर्म का अनुबंध करता है और क्षण-क्षण निर्जरा। कुछ कर्म सामान्य होते हैं और कुछ कर्म निकाचित। जो प्रगाढ़ बंध है कर्मों का, उससे मुक्ति उन्हें भोगे बिना संभव नहीं है। 'कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि' इस आगम का कथन का रहस्य यह है कि किये गये कर्मों से मुक्ति उन्हें भोगने के बाद ही है। इस तथ्य को अन्य दर्शनों ने-'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' कहकर व्यक्त किया।

अभिप्राय यह हुआ कि जीवन में जो भी अच्छा या बुरा, अनुकूलता या प्रतिकूलता का संयोग बनता है, उसके मूल में व्यक्ति के स्वयं के कृत कर्म हैं। दु:ख, दैन्य और अभाव का वातावरण यदि जीवन यात्रा करते हुए उभरता है तो उसे इस विवेक, धैर्य और स्थैर्य से जुड़ कर सहना चाहिए कि मैंने जो भी, जब भी किया है, उसका यह प्रतिफल है। किसी अन्य को दोष देने या धैर्य और विवेक को खोने से इसका कोई समाधान नहीं है। मैं इसे सहजता पूर्वक सह लूं, विवेक से जुड़कर चलूं, नव कर्म बंध से अपने आप को बचाने का प्रयत्न अविचल रूप से करता रहूं, अंतत: सब कुछ मेरे जीवन में मनोनुकूल हो जाएगा।

प्राय: यह देखा जाता है कि सुखों को प्रत्येक व्यक्ति आसानी से स्वीकार कर लेता है, दु:खों को स्वीकारना बड़ी बात है। दु:खों को धैर्य पूर्वक जो सह लेते हैं, वे जीवन की दुर्लक्ष्य घाटियों को पार करके मंजिल तक पहुंच जाते हैं। किसी के जीवन में सुख ही सुख और दु:ख ही दु:ख, समान रूप से बने रहते हों, ऐसी बात नहीं है। सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख, यह तो जीवन का क्रम है। किसी कवि ने इसे बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है-

जीवन में सुख दु:ख निरंतर, आते-जाते रहते हैं।
सुख तो सब ही सह लेते पर, दु:ख धीर ही सहते हैं॥

धैर्य के अभाव में दु:खों को सहा नहीं जाता और सहे बिना कोई भी सफल नहीं होता। अक्सर विपत्तियां और ठोकरें तो मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए आती हैं। व्यक्ति को चाहिए कि वह उनसे प्रेरणा ले, निराश न बने, साहस पूर्वक शुभ करता रहे। आंतरिक जीवंतता को एक पल के लिए भी मृत न होने दे। मृत होने के बाद, बचता ही क्या है?कैसी भी परिस्थिति हो, मनुष्य को धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। दु:खों में, विपत्ति में धैर्य ही सुदृढ़ कवच का काम करता है। यह एक ऐसा मानवीय गुण है, जो मनुष्य के समस्त गुणों को प्रकाशित

करने की क्षमता रखता है।

जिस मनुष्य में धैर्य का संबल नहीं होता, वह छोटे से छोटे कार्य को भी सिद्ध करने में सफल नहीं हो पाता। इसके विपरीत जो विवेकपूर्वक, पूर्णतया सोच विचार कर धैर्य के साथ चलते हैं, वे कर्मबंध से तो बचते ही हैं, आगत दु:ख को भी सहज रूप से झेल कर सामान्य हो जाते हैं, अपने लक्ष्य को पा लेते हैं। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि व्यावहारिक क्षेत्र में किसी भी कार्य का प्रारंभ व्यक्ति कर तो देता है, पर धैर्य के अभाव में वह विकल होने लगता है। उसे बीच में ही छोड़ देता है और बार-बार असफल हो कर आंसू बहाने के लिए विवश हो जाता है जबकि धैर्यनिष्ठ जो हैं, वे एक बार जिस कार्य को प्रारंभ कर देते हैं, उसे पूर्ण करके ही छोड़ते हैं। उनका जीवन मंत्र यह होता है कि मुझे मेरी क्षमता पर विश्वास है, मैं ठीक कर रहा हूँ अंततोगत्वा ठीक ही होना है। विलम्ब यदि किसी कारण से हो रहा है तो मैं अपने धैर्य और विश्वास को कभी दफनाने की भूल नहीं कर सकता। कष्टों से क्लांत वही होते हैं जिनके पास धैर्य नहीं है।

साधना का क्षेत्र भी अत्यंत धैर्य और विवेक का क्षेत्र है। साधना पथ पर चलते हुए कई अवरोध उपस्थित होते हैं। यदि विवेक और धैर्य से काम नहीं लिया जाए तो पराजित होना पड़ता है। साधक को सफल होने के लिए दृढ़ धैर्य की आवश्यकता होती है। अकुलाहट, शीघ्रता, उतावलापन घातक सिद्ध होता है।

किसी कवि का एक प्रसिद्ध दोहा है, जो बड़ा मार्मिक है-

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय॥

माली उपवन में बीजारोपण करता है। बीजारोपण के तुरंत बाद ऐसा नहीं हो जाता कि बीज वृक्ष का स्वरूप ग्रहण कर ले एवं फल प्रदान कर दे। माली धैर्य रखकर उसे प्रतिदिन सींचता चला जाता है और ऋतु के आने के साथ ही, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जिसके लिए वह श्रमरत रहा। माली में यदि धैर्य नहीं हो तो क्या यह प्राप्ति संभव है?धैर्य खोकर व्यक्ति लुट जाता है। यूं धैर्य की अभिव्यक्ति कर देना बहुत सामान्य बात है, पर धैर्य कितना है, यह परख तो समय पर होती है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरित मानस में व्यक्त किया-

धीरज, धर्म, मित्र अरू नारी।
आपतकाल परखिये चारी॥

धैर्य, धर्म, मित्र और नारी की परीक्षा आपत्ति के क्षणों में हुआ करती है। दु:ख के आगमन पर व्यक्ति तो बौद्धिक कष्ट से कुण्ठाग्रस्त बन ही जाता है, पर समर्पण और अपनत्व का हृदय लेकर चलने वाले भी किनारा कर लेते हैं। सच्चा मित्र और सच्ची जीवन संगिनी वही है जो दु:ख में संग-संग कदम बढाए। बाल्मीकि ने कहा, 'शोक में, आर्थिक संकट में या प्राणान्तक भय उपस्थित होने पर जो अपनी बुद्धि से दु:ख निवारण के उपाय करते हुए धैर्य से काम लेता है, उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ता।' यह ठीक है कि जो प्राप्ति शक्ति और जल्दबाजी से संभव नहीं हो पाती, उसे धैर्य, परिश्रम और विवेक से हम सहज प्राप्त कर सकते हैं। कहा भी तो जाता है-धीरज के फल मीठे होते हैं। धैर्य जीवन जीने की कला है। धैर्य आनंद और शक्तियों का मूल है। धैर्य प्रत्येक सफलता का आधार है। धैर्य वह संजीवनी है, जो मृतप्राय: जीवन में पुन: नई चेतना का संचार करता है। संसार और सभ्यता में उसी मनुष्य के लिए स्थान है जो धैर्य से काम ले एवं कभी भी उदास, खिन्न और निराश न हो। धैर्य खो देने का अर्थ है-विजय के ढेर सारे अवसरों को स्वयं के हाथों नष्ट कर देना। विचारक शेक्सपियर का कथन है, 'इस संसार में, मेरी दृष्टि में वे सबसे बड़े निर्धन हैं, जिनके पास धैर्य नहीं है।'

धैर्य से हीन बन कर जो जीवन जीते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि क्या आज तक कोई जख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है।

आलेख

संघ-कल्याण के कर्णधार: आचार्य

मुनि मनितप्रभसागर

जिनशासन का अप्रतिम अनुशासन तीर्थंकर परमात्मा के द्वारा प्रदत्त है, इसी अनुशासन को आत्मसात् करते हुए पंच परमेष्ठी के पाँच पदों में से तृतीय पद पर आसीन होते हैं- आचार्य भगवंत!

'आचार्य' का अर्थ होता है- आचारवान् जो आचार को न केवल जानते-मानते हैं अपितु जीवन में उसको साकार रूप भी देते हैं।

तित्थयर समो सूरि :-

वृहद् कल्पभाष्य में आचार्य की महिमा-स्तवना करते हुए कहा गया कि तीर्थंकर की अनुपस्थिति में सूरि भगवंत तीर्थकर के तुल्य होते हैं।

परमात्मा महावीर का आयुष्य मात्र 72 वर्ष का था पर उनका शासन छब्बीस शताब्दियों से जो चल रहा है, उनमें अद्भुत योगदान आचार्य भगवंतों का है।

पंचाचार के समुज्ज्वल परिधान में अलंकृत आचार्य का वर्ण स्वर्ण वर्णीय के आभा से युक्त पीतवर्णीय कहा गया है। जिस प्रकार केसरी सिंह की गर्जना के साथ सारे वन्य प्राणी शान्तिपूर्वक उसकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं, वैसे ही आचार्य प्रवर जब सुधर्मा स्वामी के महिमामण्डित पट्ट पर विराजमान होकर जिन-देशना की गर्जना करते हैं तब बाह्य एवं अन्तरंग शत्रु तत्क्षण पलायन कर जाते हैं।

यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि शासन की वल्गा को समुचित तौर पर थामे रखने में जितना योगदान आचार्यो का होता है, उतना अन्य किसी का भी नहीं।

सूर्यवत् तेजस्वी सूरिराज-

जिनराज को शासन का महाराजा अगर कहे तो सूरिराज को युवराज कहा जा सकता है। उनका प्रशासनिक कौशल, अद्भुत धैर्य बल और तेजस्वी-यशस्वी व्यक्तित्व को शब्दों में रूपायित कर पाना संभव नहीं है।

उत्तम कोटि के नेतृत्व गुण से शोभायमान आचार्य सूर्य की भाँति भास्वर होते हैं।

उपाध्याय सूत्रों की वांचना देते हैं और उन सूत्रों के अर्थ की देशना देने का महान् उत्तरदायित्व आचार्य भगवंत द्वारा सम्पन्न होता है। इस अर्थ में आचार्यश्री सूर्य के प्रकाश व ताप, दोनों गुण-वैभव से युक्त होते हैं। सूत्रार्थ के द्वारा अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करते हैं तथा ताप के द्वारा दल-दल को सोंखने का काम करते हैं।

दशवैकालिक सूत्र के नवम विनय समाधि अध्ययन के प्रथम उद्देशक में आचार्य की महिमा में कहा गया-

जहा निसन्ते तवणच्चिमाली
पभासइ केवल भारहं तु।
एवायरियो सुय-सील-बुद्धिए,
विरायइ सुरमज्झे व इन्दो।

जिस प्रकार नभ में चमकता सूर्य प्रकाशित होता है, वैसे ही श्रुत, शील आदि से नियुक्त आचार्य देव-देवेन्द्रों के मध्य प्रकाशित होते हैं।

आचार्य के छत्तीस गुण-

गुणों के समूह से सम्पन्न गणपति-आचार्य न केवल बाह्य व्यक्तित्व से सुन्दर, सुगठित और सौम्य कायिक संपदा के धारक होते हैं अपितु उनका आभ्यन्तर व्यक्तित्व भी आकर्षक, मनमोहक और रोचक होता है।

छत्तीस गुण समग्गो णिच्चं आयरइ पंच आथारं।
सिस्साणुग्गह कुसलो, भणिओ सो सूर परमेट्ठी।।

जो छत्तीस गुणों से युक्त हो, निरन्तर पंचाचार का पालन करते हैं तथा वाचना आदि द्वारा शिष्यों पर अनुग्रह करने में कुशल हों, वे आचार्य कहलाते हैं।

प्रवचन सरोद्धार के 72 वें द्वार में आचार्य के छत्तीस गुणों का वर्णन प्राप्त होता है-

पाँच इन्द्रियों का निग्रह, ब्रह्मचर्य की नव-वाडों का पालन, पंचमहाव्रतों का धारण, पंच समिति एवं त्रिगुप्तिस्वरूप अष्टप्रवचन माता का स्वीकरण, पंचआचार परिपालन और चार कषायों पर विजय, इन छत्तीस गुणों (3+6=9) का अनूठा संयोग मानो अखण्ड सुख हेतु किया गया महान् वितियोग हो।

अन्य अपेक्षाओं से भी आचार्य परमेष्ठि के छत्तीस गुण ज्ञातव्य हैं- देशयुत् कुल भुत्, जातियुत्, रूपयुत्, संहननयुत्, धृतियुत् होने के साथ अनाशंसी हो, विकथा से विमुक्त हो। अमायावी होने के साथ आचार्य का देशज्ञ, भावज्ञ एवं कालज्ञ होना भी जरूरी है। सूत्र और अर्थ दोनों के ज्ञाता होने के साथ पंचाचार के पालक हो तथा स्व-पर सिद्धान्तों के ज्ञाता व गंभीर, सौम्य, क्षमाशील और कान्तिमान् होना भी आचार्य के गुणों में समाहित हैं। वे विविध (प्राकृत-संस्कृत-अपभ्रंश-मरू-गुर्जर) भाषाओं के जानकार होने के साथ उत्सर्ग व अपवाद मार्ग को समुचित रूप से जानते हैं।

अन्य अपेक्षा से जाति-कुल-बल-रूप-विनय-ज्ञान-श्रद्धा-आचार-लज्जा-लाघव आदि से सम्पन्न हो। वे ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी होने के साथ कषाय, इन्द्रिय, निंदा, निद्रा, परीषह को जीतने वाले भी हो। व्रत, गुण, करण, चरण, निग्रह, निश्चय, विद्या, वेद, ब्रह्मचर्य, नियम, सत्य आदि में उत्कृष्ट होने के साथ जीवन की आशा एवं मृत्यु के भय से विमुक्त हो।

आचार्य की महिमा:-

निशीथ भाष्य में कहा गया- रागद्दोस विमुक्को सीयघर समो आयरिओ' जो राग व द्वेष विमुक्त शीतघर के समान सुखदायी हो, वह आचार्य होता है।

वृहद् दृव्य संग्रह में कहा गया-

दंसणणाण पहाणे वीरिय चारित्तवर तवायारे।
अप्पं परं च जुंजइ, सो आयरिओ मुणीझेओ॥

जो ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार में न केवल स्वयं नियुक्त व प्रयत्नशील होते हैं अपितु सकल संघ को भी प्रोत्साहित करते हैं, वे आचार्य होते हैं।

आचार्य ही शासन की जड़ों को सूत्र व अर्थ के अमृत से सींचते है, श्रुत और चारित्र का वैभव देते हैं, निश्चय व व्यवहार धर्म का बोध देते हुए अध्यात्म और विज्ञान का सामंजस्य बताते एवं द्रव्य व भाव का रहस्य प्रकट करते हैं।

आचार्य की आज्ञा-सेवा-शास्त्रों में कहा गया **'आयरिय पायापुण अप्पसन्ना अबोही आसायण नत्थि मुक्खों'** आचार्य के अप्रसन्न होने से अबोधि (मिथ्यात्व) को प्राप्त होकर शिष्य आशातना के कारण मोक्ष से सुदूर हो जाता है अत: शिष्य को चाहिये कि आचार्य के इंगिताकार को समझे, तदनुरूप आचरण करें, अनुशासित होने पर कुद्ध न हो एवं **'पंजलिउडो न वइज्जा पुणुत्ति'** गलती के लिये क्षमायाचना करता हुआ हाथ जोड़कर कहे- हे गुरुदेव! यह अपराध पुन: नहीं होगा। दशवेकालिक में कहा गया कि आशीविष सर्प के दंश से, विष भक्षण से, अग्नि में गिरने से, पर्वत से गिरने से कदाचित् कोई मृत्यु को प्राप्त न हो पर आचार्य की अप्रसन्नता से वह निश्चय ही अबोधि को प्राप्त होता है एवं संसार-वन में परिभ्रमण करता है, अत: मोक्ष-सुख के आकांक्षी को गुरु की कृपा के अभिमुख होना चाहिये।

शरद् पूर्णिमा के चन्द्र की भाँति संघ-गगन में शोभायमान आचार्य की आज्ञा के पालन से जो उनके गुणों की आराधना करता है, वह अनुत्तर सिद्धि को प्राप्त करता है। शासन के नभ में अनेकानेक महाप्रभावशाली आचार्य हुए जिन्होंने जैन धर्म की महती प्रभावना की। 1444 ग्रन्थ प्रणेता श्री हरिभद्रसूरि, खरतर बिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरि, नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि, लाखो जैन निर्माता श्री जिनदत्तसूरि, श्रुत महोदधि श्री हेमचन्द्राचार्य, अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरि के तेज-ओज से आज भी शासन-गगन दैदीप्यमान है।

महावीर
जन्म कल्याणक
पर विशेष

महावीर का वीतराग दर्शन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

महावीर का दर्शन पूर्णतः वैज्ञानिकः–

इस संसार में समय–समय पर अनेक महापुरुष हो चुके है जिन्होंने पीड़ित मानव को सन्मार्ग पर लगाने का प्रयास किया। प्रायः सभी धर्म–प्रर्वतक अपनी–अपनी विशिष्टताओं से अलंकृत रहे। उन्होंने देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपनी–अपनी प्रज्ञा के अनुसार तत्कालीन समस्याओं के समाधान में सहयोग दिया। मानव को उसके परम लक्ष्य एवं कर्तव्यों का बोध कराया। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बनने की कला सिखलाई। उनमें आस्था रखने वाले विभिन्न धर्मावलम्बी अनुयायी आज भी उसका आचरण करने का प्रयास करते हैं। प्रायः सभी व्यक्ति अपने–अपने धर्म अथवा आचरण को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। परन्तु धर्म क्या है? उसका आचरण क्यों और कैसे किया जाना चाहिये? धर्म तो सदैव कल्याणकारी होता है। अपरिवर्तनीय होता है। उसमें वैमनस्य, विरोध ओर विभेद को कोई स्थान नहीं। धर्म अलग है ओर साम्प्रदायिकता अलग है। धर्म तो प्राणी मात्र को जन्म जरा एवं मृत्यु रूपी चक्रव्यूह से मुक्त करता है। धर्म की प्रामाणिकता उसके मानने वाले अनुयायियों की संख्या के आधार पर नहीं, अपितु उसके सिद्धान्तों की सूक्ष्मता पर निर्भर करती है। इस दृ ट से जितना स्प ट, तर्क संगत, वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म विश्ले ाण भगवान महावीर ने किया, अन्यत्र दुर्लभ है।

महावीर जैन धर्म के प्रवर्तक नहींः–

जैन परम्परा में तीर्थङ्करों का स्थान सर्वोपरि है। वे साक्षात् ज्ञाता, दृष्टा, वीतरागी होते हैं। भगवान महावीर से पूर्व भी इस अवसर्पिणी काल में तेईस तीर्थङ्कर हो चुके हैं, जिन्होंने धर्म के शाश्वत स्वरूप का बोध कराया। महावीर ने किसी नये धर्म का प्रतिपादन नहीं किया, परन्तु उसी सनातन सत्य का साक्षात्कार कर प्राणिमात्र के कल्याण हेतु उपदेश दिया। सभी सर्वज्ञों के उपदेश सिद्धान्त समान होते हैं, क्योंकि सत्य सनातन होता है। आवश्यकता है उसके सही स्वरूप को समझने एवं अपनाने की। धर्म आचरण की वस्तु है, थोपने की नहीं। इसी कारण जैनियों के महामंत्र नमस्कार, मंगलपाठ एवं अनु ठानों की साधना में गुणों को ही महत्व दिया गया। किसी महापुरुष की नाम से पूजा अथवा गुणगान नहीं किया गया है। अतः यह मानना गलत होगा कि वर्तमान में जैन धर्म के नाम से प्रचलित धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर थे।

महावीर मात्र नाम नहींः–

महावीर मात्र नाम नहीं है, उसका सम्बन्ध कर्म से है, कथन मात्र से नहीं। जो वे करना चाहते थे उसका पहले स्वयं उन्होंने अनुभव किया। शारीरिक बल से मानसिक बल ज्यादा शक्तिशाली होता है और आत्मबल के सामने सारे बल तुच्छ हैं। युद्ध में हजारों योद्धाओं को जीतने की अपेक्षा अपने आपको जीतना, स्वयं को संयमित, नियमित, नियन्त्रित, अनुशासित रखना ज्यादा दु कर है। आत्मा पर आये कर्मो का आवरण हटते ही व्यक्ति सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्व शक्तिमान एवं त्रिकाल ज्ञाता–दृष्टा बन जाता है। सम्पूर्ण आत्मानुभूति की अवस्था में विज्ञान की भौतिक जानकारी तो होती ही है, परन्तु उससे भी कहीं अधिक ब्रह्माण्ड के वर्तमान, भूत एवं भविष्य की सूक्ष्मतर एवं सम्पूर्ण जानकारी हो जाती है। वास्तव में वे जीवन के सर्वोच्च कलाकार, पथ प्रदर्शक एवं सर्वोच्च वैज्ञानिक होते हैं। उनका उपदेश भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति के लिये न होकर जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष–प्राप्ति हेतु होता है।

महावीर को समझने के लिये हमें पहले अपने सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ना होगा। उनका प्रत्येक आचरण एवं उपदेश सनातन सत्य पर आधारित है, जिसको समझने के लिये आवश्यक है व्यापक दृष्टिकोण। उनके उपदेश विषम परिस्थितियों एवं काल के थपेड़ों के बावजूद आज भी अक्षुण्ण बने हुए हैं। आध्यात्मिक साधना में उनका दृष्टिकोण सम्पूर्णता की खोज पर आधारित था। अनुशासनहीनता के बीच उनका जोर आत्मानुशासन पर था। उन्होंने आत्म–विकास के लिये ज्ञान एवं क्रिया के समन्वित प्रयास को आवश्यक बतलाया। वे उस ढ़ोंगवाद

को नहीं मानते, जो भोगी होते हुए भी अपने आपको परम योगी मानते हैं। भोगी निर्विकारी कैसे हो सकता है? जो मन में होगा वही तो आचरण में प्रदर्शित होगा। उन्होंने भाव क्रिया के महत्त्व को भी उजागर किया। मात्र जड़ क्रिया–काण्डों से व्यक्ति का उत्थान नहीं हो सकता। उन्होंने यतना अर्थात् विवेक में ही धर्म माना। यदि हमारा प्रत्येक कार्य विवेक एवं प्रज्ञानुसार हो तो नवीन कर्मो के बन्ध की सम्भावनाएं कम हो जाती है। उनके अनुसार प्रमाद विकास में सर्वाधिक बाधक है। प्रमाद अर्थात् सुषुप्त अथवा असावधान। अज्ञानी ही प्रमादी होता है। जो स्वयं असजग है, अपने प्रति ईमानदार नहीं, वह दूसरों को कैसे जगा देगा। अतः भगवान महावीर ने स्वयं साढ़े बारह वर्ष तक उग्र साधना कर पूर्णता प्राप्त की। जब तक सर्वज्ञ न बने पूर्ण मौन रहे। परन्तु जागृत होने के पश्चात् संसार को सही मार्ग का उपदेश देने में कंजूसी नहीं की। जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति की जितनी सूक्ष्मतम, तर्क संगत व्याख्या और विवेचन महावीर ने श्रमणाचार की नियमावली में किया उसकी अन्यत्र कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज भी बढ़ती मायावृत्ति एवं शिथिलाचार के बावजूद महावीर की परम्परा के श्रमण और श्रमणी वर्ग, जिस सूक्ष्म अहिंसा का पालनकर अपनी जीवनचर्या चलाते हैं, वैसी कठोर आचार संहिता अन्यत्र ढूँढ़ना कठिन है। वास्तव में महावीर का उपदेश प्राणिमात्र के लिये उपयोगी हैं। वहां भेदभाव और आशंकाओं की कोई गुंजाइश नहीं। न तो किसी के साथ भेदभाव, न अपने भक्तों के लिये विशेष रियायत। उनके विराट् व्यक्तित्व को चन्द प्रसंगों के आधार पर परखा जा सकता है।

प्रतिकूलता आत्मबल की कसौटीः–

महावीर ने साधना हेतु राजपाट छोड़ा। पद, पैसे और परिवार का त्याग किया। अगर वे चाहते तो अपने राज्य में भी एकान्त साधना कर सकते थे। परन्तु उन्होंने साधना के लिये प्रतिकूल क्षेत्र चुना जहाँ उनका कोई परिचित नहीं था। वे जानते थे कि आत्मबल की परीक्षा प्रतिकूलता में ही हो सकती है। परन्तु आज हम प्रतिकूलताओं को पसन्द नहीं करते। उन्होंने पद, पैसा और परिवार का मोह त्यागा। परन्तु आज प्रायः हम पद, पैसे और परिवार के पीछे दिवाने बन अपने आपको उनके अनुयायी समझने का अहम् करें, कितना अप्रासंगिक है। इस पर सारे पूर्वाग्रह छोड़ शुद्ध चिन्तन अपेक्षित है।

स्वालम्बन के उद्घोषकः–

महावीर आत्म–साधना में स्वावलम्बन के पक्षधर थे। मनुष्य को अपने कर्मो का क्षय अपने ही पुरुषार्थ से करना होता है। अतः वे साधना पथ पर अकेले ही आगे बढ़े। जब देवों के सम्राट् शक्रेन्द्र उनकी सेवा में उपस्थित हो प्रार्थना करने लगे ''भगवन् आपको साधना काल में भयंकर उपसर्ग (कष्ट) आने की संभावना है, अतः मैं आपकी सेवा में रहकर उससे रक्षा करना चाहता हूँ।'' उसके प्रत्युतर में भगवान महावीर ने कहा– ''आज तक कोई भी प्राणी दूसरों की सहायता से अपने समस्त कर्मो से मुक्त नहीं हुआ। किये हुए कर्मो का भुगतान तो स्वयं को ही करना पड़ता है।'' इस प्रकार उन्होंने प्राणी मात्र में स्वावलम्बी बन अपनी सुषुप्त चेतना को जाग्रत करने का आत्मविश्वास जागृत किया। स्वावलम्बन की पहली शर्त है स्वाधीनता। पराधीनता दुःख का कारण है, जो दासता में जकड़ती है। स्वाधीनता में ही सुख है। वही अपनी शक्तियों के विकास का केन्द्र बिन्दु है। स्वाधीनता से ही अपनी अनन्त शक्तियों का द्वार खुलता है। जिससे सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र प्रकट होता है। महावीर कठोर, परन्तु हृदयग्राही, आत्मानुशासन के प्रवर्तक थे। साधक यदि कठोर मार्ग पर न चले तो उसके फिसलने की संभावना सदैव बनी रहती है। अतः वे स्वयं कठोर चर्या में रहे तथा अपने शिष्य समुदाय के लिये भी उन्होंने कठोर श्रमणाचार का निर्देशन किया। उन्होंने भक्त और भगवान के बीच की खाई को समाप्त करने का उपदेश दिया। वे भक्त को सदैव भक्त ही रखने के पक्षधर नहीं थे। अवतारवाद की मान्यता उन्हें स्वीकार नहीं थी। उन्होंने प्राणी मात्र के अन्दर उस परम परमात्म पद को पहिचाना। इसी कारण उनके सम्पर्क में आकर सम्यक् साधना में पुरुषार्थ करने वाले अनेक साधक उनके समकक्ष सर्वज्ञ बन गये।

अनन्त करुणामय व्यक्तित्वः–

दुनियां में मातृत्व में ही इतनी शक्ति है कि अपने बच्चे के प्रति अपार अनुराग होने से माता के स्तनों में दूध आने लगता है। महावीर के जीवन के अलावा संसार में आज तक ऐसा दृष्टान्त उपलब्ध नहीं कि चण्डकौशिक जैसा भयंकर दृष्टि विषधारी सर्प काटे और रक्त के स्थान पर दूध की धारा बहे। प्राणिमात्र के प्रति कितनी दया, करूणा, अनुकम्पा और कल्याण की भावना होगी ऐसे महापुरुष में, जिसकी सहज कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नारी उत्थानः–

भगवान महावीर के युग में भारतीय नारी की बहुत

दुर्दशा थी। नारी उत्पीड़न की तरफ जनसाधारण का ध्यान आकर्षित करने हेतु अपने साधना–काल में उन्होंने तेरह बोलों का कठोर अभिग्रह (संकल्प) लिया। जिसके अनुसार उन्होंने तब तक भिक्षा ग्रहण न करने का निश्चय किया जब तक कोई तीन दिन की भूखी, रोती हुई, भूतकाल की राजकुमारी, हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़िया पहिने, सिर से मुण्डित, अबला उन्हें भिक्षा नहीं देगी। कैसी उपेक्षित थी नारी उस युग में? सहज ही कल्पना की जा सकती है।

ऐसे समय में नारी को अपने धर्म–संघ में दीक्षित कर श्रमणी बनाना तथा अपने धर्म तीर्थ में साधु और श्रावक के समकक्ष क्रमशः साध्वी तथा श्राविका को स्थान देना उस युग का कितना क्रान्तिकारी कदम होगा।

जातिवाद का प्रतिकारः–

भगवान महावीर की स्पष्ट घोषणा थी कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है। हरिकेशबल जैसे नीच कुल में जन्में क्षुद्र को अपने धर्म संघ में दीक्षित कर, धर्म के नाम पर जातिवाद का उन्होंने प्रतीकार किया। जातिवाद के नाम पर रा ट्र में विघटन करने वालों एवम् अपने स्वार्थो से प्रेरित अनुसूचित एवं नीच जातियों के उत्थान का दावा करने वालों को महावीर के जीवन प्रसंगों का अध्ययन कर अहम् छोड़ देना चाहिए।

पाप से घृणा करो पापी से नहींः–

भगवान महावीर ने अर्जुनमाली जैसे 1141 व्यक्तियों की हत्या करने वाले को अपने धर्म संघ में दीक्षित कर साधना के क्षेत्र में इतना गतिमान किया कि छः मास के अन्दर ही उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। भगवान महावीर ने इस घटना के माध्यम से जनसाधारण को प्रतिबोधित किया कि पाप से घृणा करो पापी से नहीं। क्योंकि पापी कभी भी पाप छोड़ धर्मी बन सकता है, परन्तु पाप कभी धर्म नहीं हो सकता।

रागद्वेष त्यागे बिना मोक्ष नहींः–

सम्पूर्ण सत्य की व्याख्या और सूक्ष्मतम विश्लेषण वही कर सकता है जो स्वयं वीतरागी है। उसका न तो किसी के प्रति राग होता है और न किसी के प्रति द्वेष। जब तक राग और द्वेष रहेगा अपने भक्तों के प्रति ममत्व और अन्य की उपेक्षा होना संभव है। विश्व के इतिहास में शायद ही कहीं ऐसा दृष्टान्त मिलता है कि भक्त अपने परम लक्ष्य मोक्ष को तब तक प्राप्त न कर सका जब तक उसको अपने आराध्य के प्रति राग था। भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य गणधर गौतम को भी तब तक केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई जब तक कि उनका भगवान के प्रति राग समाप्त नहीं हुआ। आज जो साम्प्रदायिक कट्टरता से धर्म बदनाम हो रहा है, उसका रूप विकृत हो रहा है, अपने को ही अच्छा और अन्य को बुरा बतला कर घृणा का वातावरण बनाया जा रहा है उन सभी धर्म के ठेकेदारों को चिन्तन करना होगा कि कहीं उनका आचरण उनके आत्म–विकास में बाधक तो नहीं है।

सम्यक्त्व ही साधना का केन्द्रः–

भगवान महावीर ने मिथ्यात्व अथवा गलत धारणा, मान्यता, श्रद्धा को मोक्ष की साधना में सबसे अधिक बाधक माना। सम्यक्त्व (सही दृष्टि) के बिना सच्चा ज्ञान और आचरण सम्यक् नहीं हो सकता। उनकी साधना का लक्ष्य था समभाव से वीतरागता की प्राप्ति। समता ही धर्म का लक्षण है। वह विवादों से परे होता है। उतार–चढ़ाव, मान–अपमान, अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने आपको विचलित न होने देने का मूल मंत्र है। दूसरी बात यह है कि जब तक जीव–अजीव का सूक्ष्मतम भेद समझ में नहीं आवेगा अहिंसा का पालन पूर्ण रूप से नहीं हो सकता। पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल में चेतना को सर्वज्ञ ही जान सकते हैं। वर्तमान विज्ञान की पहुँच से भी वह बहुत परे है। इसी कारण अन्य धर्मो में सूक्ष्म हिंसा से बचने का प्रावधान एवं सोच नहीं है, जितनी बारीकी से जैन श्रमणाचार की नियमावली में प्रतिपादित किया गया है।

महावीर का दर्शन सभी के लिये जीवन्त दर्शन है, अलौकिक दर्शन है। उसके अभाव में ज्ञानी का ज्ञान, पंडित का पांडित्य, विद्वान् की विद्वत्ता, धार्मिक का धर्माचरण, भक्तों की भक्ति, अहिंसकों की अहिंसा, न्यायाधीश का न्याय, राजनेताओं की राजनीति, वैज्ञानिकों की वैज्ञानिक शोध, चिकित्सकों की चिकित्सा, चिन्तकों का चिन्तन, लेखकों का लेखन, कवि का काव्य अधूरा है जो सार्वकालिक सत्य नहीं भी हो सकता है। कहने का सारांश यही है कि महावीर के सिद्धान्तों से मतभेद रखना, उन्हें अस्वीकारना, चिन्तनशील, प्रज्ञावान, विवेकवान व्यक्ति के लिये संभव नहीं। फिर वह जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो? उनके दर्शन में अहिंसा, अनेकान्त अपरिग्रह का समग्र दर्शन है जो शाश्वत सत्य की आधारशिला पर प्ररूपित किया गया है।

–चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
जोधपुर–342003 (राज.)

समाचार दर्शन

एक अद्‌भुत, ऐतिहासिक, एकता की मिशाल बालोतरा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 11, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री अमितयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 12 की परम पावन निश्रा में बालोतरा नगर के प्राचीन श्री केसरियानाथ परमात्मा के मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 21 फरवरी 2018 को अत्यन्त आनंद उल्लास के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर पू. साध्वी श्री मोक्षांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 का भी पदार्पण हुआ।

परमात्मा का यह मंदिर शहर की उपस्थिति के काल से है। जीर्णशीर्ण होने के कारण पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा व उनके मार्गदर्शन में जीर्णोद्धार का कार्य संपन्न हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर केसरियानाथ मंदिर ट्रस्ट के तत्वावधान में संपन्न हुए इस समारोह का प्रारंभ 16 को कुंभ स्थापना आदि विधानों से हुआ। ता. 20 फरवरी को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा निकाला गया। पिछले वर्षों में ऐसा अनूठा व विशाल वरघोडा नहीं देखा गया।

सबसे बडी विशेषता रही कि पूरी प्रतिष्ठा में दिगम्बर, श्वेताम्बर, मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी संपूर्ण जैन समाज ने अपनी पूर्ण भागीदारी निभाई।

ता. 21 को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा केशरियानाथ, मल्लिनाथ व पद्‌मप्रभ भगवान गादीनशीन हुए। साथ ही प्राचीन केसरियानाथ प्रभु, दादा गुरुदेव की प्रतिमा व प्राचीन चरण, नाकोडा भैरव व सच्चिया देवी की प्रतिमा बिराजमान की गई। अमर ध्वजा व स्वर्ण कलश का लाभ भडली वाले श्री सुमेरमलजी माणकचंदजी ढेलडिया बोहरा परिवार अनमोल ज्वेलर्स, बालोतरा ने लेकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। परमात्मा को बिराजमान का लाभ श्री रूपकुमारजी मोहनलालजी मदनलालजी धमेन्द्रकुमारजी चौपडा परिवार कवास वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के दिन फलेचुन्दडी का लाभ श्री मुलतानमलजी हिन्दुमलजी कंकु चौपडा परिवार के श्री गौतमचंदजी चौपडा परिवार यूनिवर्सल ग्रुप ने लिया।

तोरण का लाभ श्री भैरूलालजी भरतजी पीयूषजी गोगड परिवार पाली वालों ने लिया। बालोतरा नगर में संपन्न यह प्रतिष्ठा युगों युगों तक याद रहेगी।

अम्बे वेली बालोतरा में प्रतिष्ठा संपन्न

बालोतरा नगर के अम्बे वेली में शा. उम्मेदराजजी मिश्रीमलजी श्रीश्रीमाल परिवार मूंगडा वालों द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री वासुपूज्य परमात्मा के शिखरबद्ध जिन मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. आदि ठाणा 8 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 11, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणाआदि साधु साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में संपन्न हुई।

ता. 15 फरवरी को पूज्य श्री का मंगल प्रवेश हुआ। ता. 16 को शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया। रात्रि भक्ति, स्वामिवात्सल्य आदि में सकल श्री संघ की उपस्थिति विशाल थी।

इस प्रतिष्ठा के साथ ता. 16 फरवरी को माताजी श्रीमती मोहिनीदेवी का जीवित महोत्सव मनाया गया। परमात्मा की साक्षी से अठारह पाप स्थानकों की आलोचना की गई।

ता. 17 को परमात्मा को गादीनशीन किया गया। इस प्रतिष्ठा की विशेषता रही कि मंदिर निर्माण से लेकर संपूर्ण प्रतिष्ठा का सारा लाभ एक परिवार शा. उम्मेदराजजी मिश्रीमलजी श्रीश्रीमाल मूंगडा वालों ने लिया। किसी भी प्रकार की कोई बोली नहीं बोली गई।

प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर सूरत, सांचोर, हाडेचा, चितलवाना, कारोला, धमाना, शेरगढ, नगर, सिणधरी, मूंगडा, सरणु, बायतू आदि स्थानों से बडी संख्या में समाज का आगमन हुआ। सभी ने अपना पूर्ण सहयोग देकर प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाया।

टोंक में खरतरगच्छ महिला परिषद का गठन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में टोंक नगर में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद टोंक शाखा का गठन किया गया।

सर्व सम्मति से श्रीमती मीना जैन को अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष श्रीमती मधुबाला लोढ़ा, श्रीमती सुधा लोढ़ा को मंत्री, सहमंत्री विनीता भंसाली व कोषाध्यक्ष श्रीमती अनु दासोत को चुना गया।

हर शनिवार व रविवार को सामायिक पाठशाला चलाना तय किया गया। जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी श्रीमती मधुबाला लोढ़ा को सौंपी गई।

मुंगेली में अठारह अभिषेक संपन्न

मुंगेली मंदिरजी में 2 अप्रेल को सुबह 9 बजे से छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणी, महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं, गुरुवर्या मंडल प्रमुखा श्री मनोरंजनाश्रीजी म.सा., नवकार जपेश्वरी श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की निश्रा में अठारह अभिषेक पूजा का भव्यातिभव्य आयोजन किया गया। मंदिरजी में प्रतिष्ठित सभी प्रतिमाओं का विधिवत अभिषेक किया गया। कार्यक्रम में सभी उपस्थित रहें।

प्रेषक : जैन श्री संघ, मुंगेली

भूमि एवं भवन के दानदाता मरिड़या परिवार का हुआ अभिनन्दन

सांचोर के निकटवर्ती चितलवाना गांव में संघवी लाधमलजी मावाजी मरड़िया परिवार द्वारा लगभग तीन करोड की लागत से नवनिर्मित राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन का लोकार्पण 27 जनवरी 2018 को परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छापति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब, पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. की पावन सानिध्यता में जालोर सिरोही सांसद देवजी एम पटेल के करकमलों से समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हजारों की संख्या में चितलवाना एवं आस-पास के गांवों के ग्रामवासी उपस्थित थे।

दानदाता परिवार की ओर से फले चुनड़ी (महाप्रसादी) का भी आयोजन किया गया था। विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर विशेष योग्यजन आयुक्त बन्नेसिंह गोहिल, जिला कलेक्टर बी. भंसाली, पूर्व विधायक जीवाराम हनुमानराम भादू, मरीन लाईन जूनियर जीवराज शाह, जिला शिक्षा अधिकारी अधिकारी भैराराम चौधरी, विद्यालय सेवी तेजराजजी गुलेच्छा, प्रकाशजी लुणावत, इन्द्र भाई जैन, डॉ. आई.बी. सदस्य शंकर भाई खण्डेलवाल, धनाराम पुरोहित, जिला प्रमुख डॉ. एल.कोठारी, जोधपुर विधायक कैलाश चौधरी, पंचायत समिति प्रधान चैम्बर के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. ललित आमेठा, अतिरिक्त जिला शिक्षा प्रधानाचार्य घनश्याम खींची, समाज कानूंगो, पुखराजजी भंसाली, प्रेम जैन, केन्द्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड के बाबुलाल गांधी, तहसीलदार रणछोडराम, पुलिस उप अधीक्षक आदि कई सम्माननीय लोग मौजूद थे।

चितलवाना पट्टा के लगभग १८ हजार से अधिक लोगों ने फलेचुंदड़ी में की शिरकत

कार्यक्रम का संचालन कन्हैयालाल खण्डेलवाल ने किया। सुप्रसिद्ध कवयित्री सावित्री कोचर ने अपनी हास्य रचनाओं से श्रोताओं को गुदगुदाया। दानदाता परिवार के बाबुलाल मरड़िया, शांतिलाल मरड़िया व भंवरलाल मरड़िया सहित उनके परिजनों का राज्य सरकार एवं विभिन्न संगठनों की ओर से बहुमान कर अभिनन्दन किया गया। राज्य सरकार एवं शिक्षा विभाग की ओर से अभिनन्दन पत्र जिला कलेक्टर एवं अतिथियों के हाथों से दानदाता परिवार को दिया गया।

कार्यक्रम में दानदाता परिवार द्वारा स्व. अनिता मरड़िया स्मृति विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना का शुभारम्भ किया गया और इसके तहत जालोर जिले के 20 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुखराज भंसाली, प्रकाश संघवी एवं एम्स के सहायक निदेशक ए.आर. विश्नोई को

'राजस्थान गौरव' पुरस्कार से नवाजा गया।

शिक्षा के मंदिर से बढ़कर कोई पवित्र कार्य नहीं-मणिप्रभसागर

विद्यालय भवन लोकार्पण के अवसर पर जैनाचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने अपने प्रवचन में कहा कि शिक्षा के मंदिर से बढ़कर दूसरा कोई पवित्र कार्य इससे अधिक नहीं हो सकता। धन तो बहुत लोगों के पास होता है लेकिन पूर्व जन्म की पुण्याई और पारिवारिक एकता से ही इस प्रकार से कार्य सम्पन्न हो पाते हैं।

आज के जमाने में सबसे अच्छी बात यह होती है कि अपनों का अपनापन बना रहे। परायों के परायेपन से अधिक दु:खदाई होता है अपनों का परायापन! हर समय हमें हमारे जीवन को प्रसन्नता से बिताना चाहिये। जब हम कोई फोटो खिंचवा रहे होते हैं तो हम अपनी मुखमुद्रा को प्रसन्न रखते हैं। उसी प्रकार हमें हर समय यह चिंतन करना चाहिये कि परमात्मा द्वारा हमारा हर क्षण फोटो खींचा जा रहा है। जीवन जीना हमें महापुरूषों से सीखना चाहिये। बचपन कृष्ण जैसा हो, नटखट! निश्छल प्रेम से परिपूर्ण! युवावस्था राम जैसी जीनी चाहिये- मर्यादा से परिपूर्ण! वृद्धावस्था परमात्मा महावीर जैसी अनासक्ति व वैराग्य के साथ जीनी चाहिये।

सेवा के कार्यो में जैन समाज हमेशा अग्रणी-पटेल

समारोह के मुख अतिथि जालोर सिरोही के सांसद देवजी पटेल ने इस अवसर पर कहा कि विद्यालय, अस्पताल, धर्मशाला जैसे सामुदायिक सेवा के कार्यों में जैन समाज के लोग हमेशा अग्रणी रहते हैं। गांव-गांव में इस प्रकार के सेवा कार्यों से मानवता की सेवा के साथ ही सामाजिक सरोकारों को बल मिलता है। चितलवाना में मरड़िया परिवार द्वारा निर्मित यह विद्यालय भवन भी शिक्षा के सुखद भविष्य में एक मील का पत्थर साबित होगा। समारोह में दानदाता परिवार की ओर से श्रीमती जयादेवी शांतिलालजी मरड़िया व उनके सुपुत्र मुकेश मरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये।

जिले के २० प्रतिभाशाली छात्र-छात्राएं सम्मानित

स्व. अनिता मरड़िया स्मृति विद्यालय प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत जालोर जिले के सरकारी विद्यालयों में कक्षा दसवीं एवं बारहवीं बोर्ड में आने वाले प्रथम दस छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं रजत पद से सम्मानित किया गया।

संघवी, भंसाली व विश्नोई को राजस्थान गौरव पुरस्कार

इस अवसर पर सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए रत्लमणी मेटल के नैनावा निवासी प्रकाश संघवी, हाडेचा के समाजसेवी पुखराज भंसाली व भारतीय इंजिनियरिंग सेवा के जोगाऊ निवासी एम्स के सहायक निदेशक एन. आर. विश्नोई को राजस्थान गौरव पुरस्कार से दानदाता परिवार द्वारा सम्मानित किया गया। अभिनन्दन पत्र एवं स्मृति चिन्ह अतिथियों को अर्पण किया गया।

१०५ फीट उँचा लहराया गया तिरंगा, राष्ट्र वंदन स्मारक का लोकार्पण

विद्यालय लोकार्पण के एक दिन पूर्व गणतंत्र दिवस को विद्यालय परिसर में ही दानदाता परिवार द्वारा 105 फीट ऊंचे राष्ट्र वंदन स्मारक का भी लोकार्पण किया गया। लोकार्पण के पश्चात् गणतंत्र दिवस का चितलवाना का मुख्य समारोह इसी परिसर में सम्पन्न हुआ। 105 फीट की ऊंचाई पर 600 वर्ग फीट के तिरंगे को राष्ट्रगान एवं सलामी के साथ फहराया गया। कार्यवाहक उपखण्ड अधिकारी रणछोड़राम मेघवाल ने ध्वजारोहण किया एवं मार्चपास्ट की सलामी ली। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के बालक बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का संचालन कन्हैयालाल खण्डेलवाल एवं छाया विश्नोई द्वारा किया गया। प्रशासन द्वारा 30 व्यक्तियों को उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

फले चुंदड़ी में १८ हजार से अधिक लोगों का जमावड़ा

विद्यालय उद्घाटन समारोह क अवसर पर फलेचुंदड़ी (स्वामीवात्सल्य) का आयोजन भी मरडिया परिवार द्वारा किया गया, जिसमें चितलवाना पट्टा के 18 हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। सभी ने मरडिया परिवार की इस नेक कार्य के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

पूज्य आचार्य श्री के जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर भव्य समारोह का आयोजन

पाली नगर में वीर दुर्गादास नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के 59 वें वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में ता. 28 फरवरी 2018 को अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

पाली निवासी परम गुरुभक्त श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी केतन चेतन जैन तथा परम गुरु भक्त श्री जगदीशचंदजी सौ. मंजू देवी भंसाली ने आयोजन का संपूर्ण लाभ लिया। ता. 28 को अनुभव स्मारक से विहार किया। महावीर नगर होते हुए वी.डी. नगर पधारे। श्रीसंघ द्वारा भव्य सामैया किया गया।

आयोजित सभा में पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री शीलांजना श्रीजी म., पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञा श्रीजी म., पू. साध्वी श्री भव्यप्रिया श्रीजी म. आदि एवं श्री जगदीशचंदजी भंसाली, श्री प्रमोद जी भंसाली, श्री केसरीचंदजी छाजेड़, भंसाली परिवार की बालिकाऐं आदि ने पूज्य श्री का अभिनंदन करते हुए संस्मरण सुनाये। सभा का संचालन पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया। दोनों ही लाभार्थी परिवारों द्वारा पूज्य श्री को कामली ओढ़ाई गई। स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। समारोह में महापौर श्री महेन्द्रजी बोहरा सहित जैन समाज के सभी समुदायों के आगेवान लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कुशल वाटिका में लगेगा वांचना शिविर

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य विद्वद्वर्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा कुशल वाटिका, बाडमेर में ता. 1 जून से 5 जून तक पंच दिवसीय वांचना शिविर का भव्य आयोजन किया गया है।

इस शिविर में भाग लेने के लिये 12 वर्ष से उपर के सभी बालक बालिकाऐं, पुरूष, महिलाऐं सादर आमंत्रित हैं। इस शिविर में जीवन जीने की कला, धर्म का प्रारंभिक रहस्य, सम्यग्दर्शन, कर्म विज्ञान, इतिहास, विधि विधान आदि विविध विषयों पर विवेचना के साथ साथ कई आकर्षक अन्य कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

निवेदन है कि इच्छुक लोग अतिशीघ्र फार्म भर कर स्वीकृति प्राप्त करें।

संपर्क सूत्र
पुरूषोत्तम सेठिया–9414108313, प्रकाश छाजेड–9414153828

३० अप्रेल को दो दीक्षाऐं होगी

आगामी वैशाख सुदि पूनम ता. 30 अप्रेल 2018 को खरतरगच्छ गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में दो दीक्षाऐं संपन्न होगी। एक दीक्षा ब्यावर में श्री ओमजी दवाई वालों की पुत्र वधु श्रीमती सौ. कमलजी बरडिया की होगी।

दूसरी दीक्षा कम्पली (कर्णाटक) में मूल कानाना वर्तमान में कम्पली निवासी कुमारी भावना चौपड़ा की होगी।

ब्यावर में पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. आदि की निश्रा में यह समारोह होगा। दीक्षार्थी बहिन पू. साध्वी श्री डॉ. संयम ज्योति श्रीजी म. की शिष्या बनेगी।

कम्पली में पूजनीया गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचना श्रीजी म. की निश्रा में दीक्षा होगी, उनकी शिष्या बनेगी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने विनंती स्वीकार कर शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

पूज्यश्री का विचरण

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा जहाज मंदिर से विहार कर गोल, सायला, सुराणा होते हुए बागोडा पधारे। जहाँ पूज्य श्री का प्रवचन हुआ। बागोडा से मेडा पधारे जहाँ विशेष वर्ग आयुक्त राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त श्री धन्नारामजी पुरोहित के आग्रह पर पूज्यश्री बिराजे। पूरा लाभ श्री पुरोहितजी ने लिया। पूज्यश्री का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। वहाँ से विहार कर झाब, सेवाडा होते हुए ता. 26 जनवरी को चितलवाना पधारे। जहाँ ता. 27 को संघवी शा. लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा निर्मित भव्यातिभव्य स्कूल का उद्घाटन हुआ।

ता. 28 को पूज्यश्री का सांचोर नगर में प्रवेश हुआ। सांचोर के कार्यक्रम के पश्चात् ता. 30 जनवरी को शाम को कारोला पधारे। जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में चल रहे श्री नमिनाथ जिन मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य का अवलोकन किया। वहाँ से विहार कर धमाना, सेवाडा, गांधव, रामजी की गोल आर्य गुण तीर्थ होते हुए गुडामालानी पधारे। जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 3 फरवरी को आराधना भवन का शिलान्यास विधान संपन्न हुआ। ता. 4 को धोरीमन्ना में भव्य प्रवेश संपन्न हुआ।

ता. 6 फरवरी को पूज्यश्री का चौहटन नगर में भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ। यह ज्ञातव्य है कि पूज्यश्री की निश्रा में ही श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। पूज्यश्री चौहटन में दो दिन बिराजे। प्रवेश के दिन श्री जगदीशजी धारीवाल परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। दूसरे दिन मणिधारी युवा परिषद् की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री 9 फरवरी को कुशल वाटिका पधारे। ता. 10 को प्रातः कुशल वाटिका में श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड परिवार द्वारा निर्मित होने वाले आराधना भवन का शिलान्यास हुआ।

ता. 10 को ही बाडमेर नगर में पूज्यश्री का अतिभव्य नगर प्रवेश हुआ। पूज्यश्री दो दिन बाडमेर बिराजे। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री बायतू होते हुए ता. 14 फरवरी को बालोतरा नगर में प्रवेश संपन्न हुआ।

जहाज मंदिर से बालोतरा तक के विहार में जहाज मंदिर के कोषाध्यक्ष सांचोर निवासी श्री प्रकाशजी छाजेड जालोर वालों ने विहार व्यवस्था का पूरा उत्तरदायित्व सम्हाला। अपने सारे काम छोड कर वे पूज्यश्री के साथ रहे। साथ ही केयुप सांचोर, केयुप धोरीमन्ना, केयुप चौहटन व विहार ग्रुप बाडमेर का भी पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।

बालोतरा की अंजनशलाका प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् 22 को विहार कर ता. 27 को पाली पधारे। ता. 28 को विहार कर पूज्यश्री ता. 7 मार्च को बिजयनगर पधारे, जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 12 मार्च को ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से विहार कर ता. 14 को पूज्यश्री गुलाबपुरा पधारे। जहाँ एक दिवसीय प्रवास में हाईस्कूल में प्रवचन हुआ। श्री बसंतीलालजी राजकुमारजी काल्या परिवार की ओर से चारों समाज का स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री हुरडा, सगारिया होते हुए ता. 17 को धनोप पधारे। यहाँ 9 वर्ष पहले पूज्यश्री द्वारा प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। वहाँ से विहार कर देवलिया पधारे। यहाँ पर भी पूज्यश्री की निश्रा में प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। यहाँ से भिनाय होते हुए ता. 20 को सराना पधारे। जहाँ परम गुरु भक्त दुनीवाल परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य, प्रवचन आदि अनेक कार्य संपन्न हुए। यहाँ 800 वर्ष प्राचीन जिन मंदिर का जीर्णोद्धार पूज्यश्री की पावन निश्रा में संपन्न होने जा रहा है।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री सरवाड पधारे। जहाँ कुमट परिवार ने पूरा लाभ लिया। वहाँ से फतेहगढ, बोराडा होते हुए ता. 25 को मालपुरा पधारे।

ता. 31 को चैत्री पूर्णिमा को शाम को विहार कर पूज्यश्री ता. 3 अप्रेल को टोंक नगर में प्रवेश करेंगे। वहाँ से 4 को विहार कर 8 अप्रेल रविवार को जयपुर में प्रवेश करेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 19 अप्रेल को जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा, 20 को सुपार्श्वनाथ मंदिर में पद्मावती देवी की एवं ता. 22 को दादावाडी मानसरोवर एवं 23 को सांगानेर दादावाडी में काला गोरा भैरव की प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री किशनगढ़, अजमेर होते हुए चित्तौड पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 6 मई को, निम्बाहेडा में 9 मई को तथा 13 मई को मंगलवाड चौराहा में प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

सत्यपुर नगर में पंचान्हिका महोत्सव का हुआ समापन

26 जनवरी से कार्यक्रम का हुआ आगाज

28 जनवरी को खरतरगच्छाधिपति एवं साधु साध्वी भगवंतों का भव्य नगर प्रवेश

29 जनवरी को परमात्मा शांतिनाथ जिनालय की 25 वीं ध्वजारोहण 12:39 के शुभ मुहूर्त में हुआ

30 जनवरी को दादाबाड़ी में 10:30 बजे दादा गुरुदेव की ध्वजा चढ़ाई गई

परम पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में 5 दिन पूजन का कार्यक्रम विधि कारक एवं जिनकुशल बालिका मंडल द्वारा किया गया। गायक कलाकार गौरव मालू ने अपनी भक्ति से खुशहाल माहौल बनाया। गुरुदेव एवं साध्वी भगवंत का भव्य प्रवेश कई नगर के विभिन्न राज मार्गो से होता हुआ गोड़ी पार्श्वनाथ प्रांगण में पहुंच कर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। इस अवसर पर पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. की शिष्याओं का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्रीप्रकाशचंद जी कानूगो ने किया। दीप प्रज्वलित एवं बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत से गुरुदेव का अभिनंदन किया। संघ के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी श्री श्री श्रीमाल ने अपने भाव प्रकट करते हुए सभी का अभिवादन किया। केवलचंदजी बोहरा एवं मफतलाल जी बोथरा, महिला मंडल से ललिता जी श्रीश्रीश्रीमाल ने भी सभा को संबोधित किया। मोतीलाल जी द्वारा सुंदर कविता प्रस्तुत की गई। पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से मांगलिक एवं गुरुवाणी श्रवण कर समस्त नगरजन धन्यता का अनुभव करने लगे। स्वामी वात्सल्य श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ की ओर से आयोजित हुआ। रात्रि 8:00 बजे ऋषभ की कथा की भव्य नाटिका कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई।

29 जनवरी को सुबह 11:00 बजे गुरुदेव के साथ ध्वजा के लाभार्थी श्री चम्पालालजी हंजारीमलजी बोथरा के घर से श्री सकल संघ के साथ परमात्मा शांतिनाथ जिनालय 12:39 के शुभ मुहूर्त में गुरुदेव द्वारा मंत्र उच्चारण हर्ष ध्वनि एवं ढ़ोल धमाके के साथ ध्वजा चढ़ाई गई। स्वामी वात्सल्य का लाभ श्री डुंगरजी मौजीरामजी बोथरा परिवार ने लिया।

30 जनवरी को गुरुदेव कुशल भवन से श्री संघ के साथ दादावाड़ी ध्वजा कार्यक्रम पधारे दादावाड़ी की ध्वजा प्रात: 10 बजे के शुभ मुहूर्त में लाभार्थी परिवार द्वारा चढ़ाई गई। यहाँ से गुरुदेव रामजी की गोल, धोरीमना होते हुए बाड़मेर की ओर प्रस्थान किया।

इस पंच दिवसीय कार्यक्रम में श्री संघ, दादा जिनदत्त मंडल कुशल बालिका मंडल व केयुप सांचोर का सराहनीय योगदान रहा। श्री संघ द्वारा मंडलों को हार्दिक आभार दिया। कार्यक्रम के समापन पर सह सचिव चंपालाल वाघेला ने धन्यवाद दिया।

साथ में वासुपूज्यजी जैन मंदिर की विनंती को स्वीकार करके वहाँ भी 29 जनवरी को 11 बजे ध्वजारोहण की गयी और गोडीजी ट्रस्ट की विनंती स्वीकार करके वहां भी 30 जनवरी को 9.30 बजे महावीर स्वामी जी एवं 12.39 को गोड़ीजी मंदिर में ध्वजा रोहण की गयी।

कार्यक्रम में बाड़मेर, चौहटन, धोरीमना, गुड़ामालानी, रामजी गोल, सेवाड़ा, झाब, हाडेचा, चितलवाना, बरोडा, अहमदाबाद, हैदराबाद, बेंगलूर, चैन्नई, मुंबई आदि शहरों से गुरु भक्त सम्मिलित हुए। जैन श्री संघ के अध्यक्ष सी. बी. जैन, तेजराज गोलेच्छा, पुखराज भंसाली, पिरचन्द भंसाली, हस्तिमल जी जैन, दोलतजी अंगारा, हस्तीमल चन्दन, बाबूलाल मरडिया, बाबूलाल छाजेड़, डी.एस.पी फाऊलाल मीणा, थाना प्रभारी सुखराम विश्नोई, जीवराम जी चौधरी व कई गणमान्य नागरिक, मंडल के समस्त कार्यकर्ता आदि सैकड़ों श्रद्धालु, महिलाएं व बच्चे उपस्थित थे।

– चंपालाल वाघेला, सहसचिव

खरतरगच्छ में खुशी की लहर

पाटण (गुजरात) में खरतरगच्छ भवन का भूमिपूजन सम्पन्न

खरतरगच्छ बिरुद के सहस्राब्दी वर्ष (1000 साल पूर्णता विक्रम संवत 1075-2075) के उपलक्ष में 11 फरवरी को सुबह 11 बजे परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन में पाटण स्थित पंचासरा पार्श्वनाथ तीर्थ मंदिर के समीप खरतरगच्छ भवन का भूमिपूजन पूज्य श्री गणाधीश विनयकुशल मुनिजी के शिष्य श्री विरागमुनिजी आदि ठाणा, पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की निश्रा वर्तिनी साध्वी सौम्यगुणा श्रीजी म. आदि ठाणा और साध्वी विरतीयशा श्रीजी म. के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के तत्वावधान में उपरोक्त समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर दीपचंदजी बाफना, बाबुलालजी लुणिया, रतनजी बोथरा ओर भेरुचंदजी लुणिया, नरेशजी चोपड़ा सहित खरतरगच्छ युवा परिषद अहमदाबाद के सदस्य एवं खरतरगच्छ महिला परिषद् अहमदाबाद की बहिनें उपस्थित थी।

केशरियाजी गज मंदिर में अढारिया/बीसड उपधान तप व शिविर का आयोजन

श्री केशरियाजी तीर्थ गज मंदिर में ता. 6 मई 2018 से नवकार महामंत्र का उपधान जो बीस दिन का होता है, जिसे अढारिया/बीसड कहा जाता है, वह प्रारंभ होगा। जिसकी पूर्णाहुति ता. 25 मई को होगी। 26 को पारणा होगा।

यह मिनी उपधान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि मुनिमंडल एवं पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की निश्रा एवं उनकी प्रेरणा से अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति के तत्वावधान में संपन्न होगा। इसके साथ ही कन्या शिविर 17 मई से प्रारंभ होकर 25 मई को पूर्ण होगा।

वेब पोर्टल का संघ को लोकार्पण

तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की 685 वीं स्वर्गारोहण जयन्ती के उपलक्ष्य में खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीजिनमणिप्रभसुरीश्वर जी महाराजा के आशीर्वाद से कृष्णगिरी शक्तिपीठ तीर्थ के डॉ वसन्तविजय जी महाराज साहब के कर कमलों द्वारा शहर युवा परिषद् शाखा द्वारा बनाई गई वेब पोर्टल www.yuvaparishadblr.com का विधिवत संघ को लोकार्पण किया गया, बैंगलोर युवा परिषद् शाखा के अध्यक्ष ललित डाकलिया ने बताया कि इस पोर्टल में सभी सदस्यों की जानकारी के साथ शाखा के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी एवं गच्छ से सम्बन्धित अनेक जानकारियाँ प्रदान की गई है, साथ ही यतीन्द्र भड़गतिया द्वारा निर्मित वेबसाईट www.dadaguru.in को भी समर्पित किया गया, शाखा के वैयावच्च सहयोगी आसपास के शहरों से एवं स्कूलों एवं हॉस्पिटलों से पधारे अनेक गणमान्यों ने भी दादा मेला में अपनी सहभागिता प्रदान की।

बंगलुरु में जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि मनाई

दिनांक 15.2.2018 गुरुवार को दादाश्री जिन कुशलसूरीश्वरजी म.सा. की 685 वीं पुण्य तिथि कृष्णगीरी शक्ति पीठाधिपति यतिवर्य डॉ वसंत विजयजी म. की निश्रा में बड़े ही उल्लास एवं आनंद के वातावरण में मनायी गयी। धर्म सभा को संबोधित करते हुए पू. गुरुदेव ने फरमाया कि दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. सा. जिनशासन के महान् ज्योतिर्धर, करूणा निधान एवं उपकारी महापुरुष थे। जिनके साधना बल से चमत्कार कदम कदम पर प्रगट होते थे। महापुरुषों का काम चमत्कार कर लोगों को भरमाना नहीं था वो लोगों को साधना, सिद्धांत, सरलता एवं सादगी के बल पर आकर्षित करते थे। यहीं कारण था कि उन्होंने उस काल में पचास-पचास हजार अजैनों को जैन बनाया। कई गोत्रों का निर्माण किया हिंसा एवं बलि प्रथा के तांडव को बंद किया। व्यसनमुक्त समाज का निर्माण किया। आडंबर एवं दिखावों का कड़ा विरोध किया। कई राजा-महाराजाओं को प्रतिबोधित कर कई तीर्थ यात्राओं को सुगम बनाया। हिंसक राजा प्रजाजनों को अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया ऐसी दिव्य आत्मा को आज हम सब नमन करते हैं आज पूरे भारत वर्ष में हजारों हजार दादावाडियां गुरुदेव की गौरव गाथा का यशोगान गा रही है। पूरे भारत वर्ष में 36 कोम भी गुरुदेव को श्रद्धा से शीश झुकाते हैं। उनका महान् उपकार हमारे पर है।

इससे पूर्व बैगलोर के राजमार्गो पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों व्यक्ति जय जयकार के नारे लगा रहे थे। 30 से अधिक मंडल रंग बिरंगी वेशभूषा में सुशोभित हो रहे थे। शोभायात्रा में झांकिया सब का मन मोह रही थी। अंत में शोभायात्रा संभवनाथ भवन पहुंच धर्मसभा में परिवर्तित हो गयी जहां ट्रस्ट के पदाधिकारियों श्री निर्भयलालजी गुलेच्छा, श्री कुशलजी गुलेच्छा, श्री मिठालालजी भंसाली, श्री तेजराजजी गुलेच्छा, श्री गजेन्द्र जी संकलेचा एवं तेजराजजी मालाणी द्वारा दीप प्रज्जवलन किया एवं म. का कांबली ओढ़ाकर सम्मान किया गया। मेले के लाभार्थी का ट्रस्ट मंडल द्वारा तिलक-माला-शॉल-अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया गया। श्री अरविन्द कोठारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत शाखा-2 की कार्यकारिणी गठित हुई

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनी बहिन म.सा. डॉ. साध्वी श्री विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या डॉ. साध्वी श्री शासनप्रभा श्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में बने अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद का गठन मिगसर वदी 5 दिनांक 8 नवम्बर 17 को हुआ था, जिसकी कार्यकरणी का गठन हुआ। चैत्र सुदी 5 दिनांक 22 मार्च को संस्था संरक्षक श्रीमती सुआदेवी नखतमलजी घीया एवं मीनादेवी प्रकाशचंदजी मेहता के मार्गदर्शन में सभी बहिनों की सर्व सम्मति से अध्यक्ष लीला चंपालालजी छाजेड़ ने अपनी कार्यकारिणी का गठन किया जिसमें उपाध्यक्ष- अंजू महेंन्द्र बोथरा, कोषाध्यक्ष- संतोष संजयजी छाजेड़, सूचनामंत्री-1 अनिता गौतमजी मालू, सूचनामंत्री-2 दमयंती गणेशजी मालू को बनाया गया है।

जहाज मंदिर के अध्यक्ष संघवी श्री मोहनलालजी दांतेवाडिया का स्वर्गवास

मांडवला निवासी संघवी श्री मोहनलालजी दांतेवाडिया का ता. को स्वर्गवास हो गया। वे जहाज मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष थे। उन्होंने कुछ वर्षों पूर्व संघ का अनूठा आयोजन किया था। धर्मनिष्ठ व क्रियानिष्ठ सुश्रावक थे।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने संवेदना/सान्त्वना संदेश में कहा कि वे धर्मप्राण समर्पित श्रावक थे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है। तथा परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति मिले।

बसवनगुड़ी बैंगलोर में आम सभा सम्पन्न

श्री जिनदत्त कुशलसुरि जैन सेवा मंडल बसवनगुड़ी बैंगलोर की आम साधारण सभा दादावाड़ी के आराधना भवन में रखी गई, सर्वप्रथम मंगलाचरण के बाद अध्यक्ष कैलाश संकलेचा ने सभी सदस्यों का स्वागत किया, तत्पश्चात कोषाध्यक्ष ललित डाकलिया ने पिछले दो सालों का आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया, इसी के साथ श्री कैलाश संकलेचा को पुनः अध्यक्ष मनोनीत किया गया एवं नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें उपाध्यक्ष अनिल भड़कतिया मंत्री पंकज बाफना सहमंत्री निलेश मेहता एवं हेमन्त गोलेच्छा एवं कोषाध्यक्ष ललित डाकलिया को बनाया गया। सनी रांका को मंडल के संगीत विभाग का प्रभार दिया गया। कार्यकारिणी में शशी चोपड़ा, मनीष मेहता लूंकड़, नितेश मुनीबोहरा, विनोद बाफना, उत्सव चोपड़ा, भरत कोठारी, कल्पेश लूंकड़, दिनेश संखलेचा, राजाबाबू पारख, अरविन्द चोपड़ा महावीर भंसाली, दीक्षित श्रीमाल, तेजस छाजेड़, मनीष धारीवाल एवं निखिल गोलेच्छा की आगामी 2 वर्षो हेतु गठित समिति के कार्यों में मुख्यतया सामाजिक कार्यों के साथ, दादावाड़ी से संबंधित कार्य, जीव दया, मानव सेवा एवं बैंगलोर के समस्त मंडलों के साथ समरसता बनाते हुए कार्यों का निर्वहन करना है।

खरतरगच्छ युवा परिषद के नाम एक संदेश

अत्यंत हर्ष की बात है की आज पूरे देश में युवा परिषद् की 90 से ज्यादा शाखाओं का गठन हो चुका है। हजारों युवा इस परिषद से जुड़कर खरतरगच्छ एवं जिनशासन की सेवा कर रहे हैं। युवाओं ने हर श्रेत्र में उत्तम कार्य किये है जैसे विहार सेवा, स्नात्र पुजा, प्रभु भक्ति, अनुकम्पा दान, जीव दया, संघ के विविध कार्यो में सुव्यवस्थित सहयोग एवं संचालन।

हर शाखा अपने-अपने तरीके से कार्य कर रही है। कमी हो तो सिर्फ उसे नियमित करने ओर उन कार्यो के प्रचार-प्रसार करने की। 'जहाज मंदिर' एक ऐसा माध्यम है जिससे हर शाखा अपने कार्यो का ब्यौरा दे सकती है। एवं अगर आपके पास कोई अच्छे विचार है तो उसे आप जहाज मंदिर में प्रकाशित करावे। हर शाखा को ये भी निर्धारित करना है कि उनके क्षेत्र में गयान वाटिका खुले ओर ज्यादा से ज्यादा बच्चों ओर बड़ो को लाभ मिले। खरतरगच्छ महिला परिषद को भी हर कार्य में संमिलित कर उन्हें प्रोत्साहित करें। मुझे पुरी आशा है कि हम सभी इन बातों को ध्यान में रखते हुए अपने गच्छ व जिनशासन की सेवा करेंगे।

अंकित बोहरा (मंत्री) प्रचार-प्रसार सीमिती के युप अहमदाबाद

बिजयनगर की प्रतिष्ठा में इतिहास रचा

अजमेर जिले के बिजयनगर में पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर ट्रस्ट के द्वारा भव्य जिन मंदिर का निर्माण किया गया। जिसकी अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. मुनि मंडल एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

ता. 7 फरवरी को पूज्यवरों के मंगल प्रवेश के साथ ही प्रतिष्ठा कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। ता. 11 फरवरी को नगर में निकली शोभायात्रा ने अपने आप में एक अनूठा इतिहास रचा। संपूर्ण मानव समाज ने, हिन्दु हो या मुसलमान सभी ने बडी संख्या में शोभायात्रा में सम्मिलित होकर पूरे विश्व को एकता का अनूठा संदेश दिया। सभी ने शोभायात्रा का स्वागत किया। ध्वजा, कलश, बिराजमान आदि की बोलियों ने इस क्षेत्र में नया कीर्त्तिमान स्थापित किया। 12 मार्च को प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् पूज्य आचार्यश्री ने साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी को कामली ओढाकर उसका अभिनंदन किया। पू. बहिन म. ने भी अपनी शिष्या को कामली ओढाई। इस अवसर पर दिये गये साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. के वक्तव्य ने सबकी आंखों को भिगो दिया। अमर ध्वजा का लाभ सिंघवी शा. उत्तमराजजी श्रीमती पारसकँवर, श्री विनयराजजी योगेन्द्रराजजी सिंघवी परिवार ने लिया। मूलनायक परमात्मा को बिराजमान का लाभ श्री बसंतीलालजी राजकुमारजी काल्या परिवार ने लिया। नाकोडा भैरव को बिराजमान करने का लाभ श्री पदमजी रांका परिवार ने लिया। भगवान के माता पिता बनने का लाभ श्री राजकुमारजी काल्या एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. दिव्यादेवी ने लिया।

प्रतिष्ठा के दिन फलेचुन्दडी का आयोजन किया गया, जिसमें 50 हजार से अधिक लोगों ने प्रसादी ग्रहण की।

जहाज मंदिर का आगामी अंक बिजयनगर प्रतिष्ठा के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

मणिधारी चम्पा विहार धाम घोटाणे (महा.) में भूमि पूजन सम्पन्न

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शुभ आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से आपकी आज्ञानुवर्तिनी प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपा श्री जी म.सा. की विदुषी शिष्या प.पू. गच्छगणिनी, मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा., प.पू. मंजुल मोहिका, स्नेहसुरभि पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. (भागु म.सा.) की प्रेरणा एवं निश्रा में दोंडाइचा एवं घोटाणे के बीच विहारधाम का भूमि पूजन ता. 1 फरवरी 2018, गुरुवार, फाल्गुन वदी एकम को बडे ही शानदान तरीके से सम्पन्न हुआ। घोटाणे विहार धाम के लिए भूमि घोटाणे निवासी श्रीमति लिलादेवी जगन्नाथ जी धनगर ने अर्पण की। अजैन होते हुए भी जिनशासन के साधु-साध्वी जी के पद यात्रा से प्रभावित होकर आपश्री की प्रेरणा से भूमि अर्पण की। साथ ही भूमि पूजन के लाभार्थी स्व. स्वरूपदेवी मोडमल जी के सुपुत्र श्रीमान् पुखराज जी चंदनमल जी श्री श्रीमाल ने लिया। नंदुरबार एवं धूलिया (महा.) के आप-पास के चार गाँव में आप श्री की ही प्रेरणा से 4-4 विहार धाम बनेंगे। नंदुरबार से सूरत के रास्ते में भादवड़ में भूमिपूजन पुखराजजी श्री श्रीमाल नंदुरबार वालों ने ही किया, दूसरा नंदुरबार बलसाणा के बीच में ढ़ढ़ाणा में भी एवं नंदुरबार दोंडाइचा के बीच में घोटाणा, और दोंडाइचा बलसाणा के बीच में करला में भी चारों विहार धाम के लिए भूमि अर्पण का लाभ दोंडाइचा निवासी भूरमल जी पारसमलजी बंब परिवार ने लिया। ढंढाणा विहार धाम के भूमि अर्पण का लाभ मोकलसर निवासी स्व. श्रीमति कलादेवी रमेशजी पालरेचा ने लिया।

अतिप्राचीन महाचमत्कारी

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ

के शास्त्र शुद्ध जीर्णोद्धार में लाभ लीजिये

पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से मूलनायक परमात्मा का उत्थापन किये बिना शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार हो रहा है। नूतन मंदिर निर्माण से जीर्णोद्धार में आठ गुणा फल शास्त्रकार भगवंतों ने बताया है। यह जीर्णोद्धार तो आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेनदिवाकर द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना द्वारा शिवलिंग में से प्रकट हुए एक अतिप्राचीन महा प्रभावशाली तीर्थ का हो रहा है। जीर्णोद्धार कार्य तीव्र गति से चल रहा है। इसमें आपके सहयोग की अपेक्षा है।

1,11,111.00 की राशि अर्पण कर जीर्णोद्धार सहभागी के रूप में संगमरमर की पट्टिका में अपने परिवार के दो नाम अंकित करवाकर महान् पुण्य लाभ प्राप्त करें।

संपर्क सूत्र

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मारवाड़ी मूर्तिपूजक समाज ट्रस्ट

श्री अवंति पार्श्वनाथ चौक, दानी गेट, पो. उज्जैन-456 006 म. प्र.

फोन : (0734) 2555553 / 2585854

अध्यक्ष - हीरालाल छाजेड़-94068 50603, सचिव-चन्द्रशेखर डागा-94250 91340

जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष : पुखराज चौपड़ा-94251 95874

बैंक खाता - बैंक ऑफ़ बड़ौदा, उज्जैन (खाता नं. 05050100007820 / IFSC CODE-BARBOUJJAIN)

भारतीय स्टेट बैंक, उज्जैन (खाता नं. 63041232720/ IFSC - SBIN0030062)

बिजयनगर प्रतिष्ठा एक नज़र में

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री द्वारा चातुर्मास-घोषणाऐं

बिजयनगर प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर ता. 12 मार्च 2018 को श्री संघों की विनंती स्वीकार करते हुए अपने आज्ञानुवर्ती साधु साध्वियों के आगामी चातुर्मास की घोषणाऐं की गई। पूज्यश्री ने संघ की महिमा का वर्णन करते हुए कहा– संघ में अनुशासन, समर्पण व गच्छप्रेम का भाव जब तक विकसित नहीं होगा, तब तक विकास संभव नहीं है। उन्होंने कहा– साधु साध्वी हमारे धर्मसंघ के प्राण हैं। मात्र विनंती करके ही हमें अपने कार्य की इतिश्री नहीं समझनी चाहिये। जिस जिस संघ के लिये जिन जिन साधु साध्वियों की घोषणा होती है, उनकी वैयावच्च का दायित्व आज से ही प्रारंभ हो जाता है। उनके विहार आदि की सुव्यवस्था उस उस संघ का कर्त्तव्य बन जाता है। चातुर्मास काल में पूर्ण रूप से सम्हालना व पुनः उनके विहार आदि की पूरी व्यवस्था का उत्तरदायित्व उस संघ को मर्यादा व समर्पण भावों से साथ सम्हालना है।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर अपने अपने क्षेत्र में केयुप के गठन व उसे पूर्ण सहयोग करने का निर्देश दिया। पूज्यश्री ने द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव के समस्त आगार रखते हुए अपने आज्ञानुवर्ती साधु साध्वियों के चातुर्मासों की घोषणा की।

इस अवसर पर पूरे भारत से बडी संख्या में पधारे श्रीसंघों की विशाल उपस्थिति थी।

चातुर्मास सूची

- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मनीषप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य बालमुनिश्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 का चातुर्मास इन्दौर म.प्र. में घोषित किया गया।
- पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ठाणा 2 का चातुर्मास सूरत में घोषित किया गया।
- पूज्य गणी श्री मणिरत्नसागरजी म. 2 का चातुर्मास तिमनगढ़ तीर्थ में घोषित किया गया।
- पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास बालोतरा घोषित किया गया।
- पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मोक्षप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मैत्रीप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिश्री मननप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. ठाणा 5 का चातुर्मास श्री जिनहरि विहार पालीताना में रहेगा।
- महत्तरापद विभूषिता साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4– इन्दौर
- प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा– जयपुर–शिवजीराम भवन, जवाहरनगर, दादावाडी व मालवीय नगर
- पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा– भिलाई व अहिवारा
- पू. गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा– मुंबई
- पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा– बाबु माधोलाल धर्मशाला पालीताना
- पू. गणिनी पद विभूषिता श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा– भुज, अंजार व शहादा
- पू. साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3– पालीताना
- पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा– डोम्बिवली
- पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा– फलोदी, नागोर
- पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा– पालीताना

- पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा- नंदुरबार व चौहटन
- पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा- शंखेश्वर तीर्थ
- पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 4- छोटी दादावाडी नई दिल्ली व खरतरगच्छ समाज दिल्ली
- पू. साध्वी संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 2- रतलाम
- पू. साध्वी श्री प्रियवंदाश्रीजी म. शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6- तिरपुर
- पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3- जोधपुर
- पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 3- सांचोर
- पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.- नीमच
- पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6- गोहाटी
- पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3- बैंगलोर
- पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3- किशनगढ
- पू. साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा- रायचूर
- पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा- सूरत गोपीपुरा
- पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4- जोधपुर बाडमेर भवन
- पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा- छापरहेडा
- पू. साध्वी श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3- सूरत पाल
- पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म. आदि ठाणा 2- लोहावट
- पू. साध्वी श्री श्वेतांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2- जैसलमेर
- पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 - करेली

-प्रेषक : मुकेश प्रजापत

खेतासर मे भव्य दादावाड़ी का निर्माण होगा

जोधपुर जिले मे ओसियाँ तीर्थ के पास खेतासर गाँव में श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी का भव्य निर्माण प्रारंभ होने जा रहा है।

चतुर्थ दादा गुरुदेव महान् क्रियोद्धारक सम्राट् अकबर गति बोधक श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म इसी खेतासर गाँव में वि. संवत् 1595 चैत्र वदि बारस के दिन रीहड़ गोत्रीय श्री श्रीवंत शाह की धर्मपत्नी सो. श्रियादेवी की रत्नकुक्षि से हुआ था। मात्र 9 वर्ष की उम्र में बडलू भोपलगढ़ में आपकी भागवती दीक्षा संपन्न हुई थी। उनका स्वर्गवास बिलाड़ा नगर में वि. 1670 आसोप वदि 2 को हुआ था। दीक्षा भूमि पर स्थित प्राचीन दादावाड़ी का जीर्णोद्धार श्री जिनदत्तकुशलसूरी खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा कराया गया। अब उनकी जन्म भूमि पर जिनमंदिर, दादावाड़ी,धर्मशाला, भोजनशाला, प्याऊ, उपाश्रय आदि का निर्माण प्रारंभ होने जा रहा है। तीर्थ स्वरूप यह निर्माण श्री जिनदत्तकुशलसूरी खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा होने जा रहा है।

इस हेतु विशाल भूखंड मूल खेतासर वर्तमान में दुर्ग निवासी संचेती गोत्रीय घेवरचंदजी, चिमनीरामजी, जुगराजजी, माणकलालजी, मिश्रीलालजी सुपुत्र सतीदानजी, परिवार के 8 हजार वर्ग फीट का भुखण्ड सहर्ष पेढ़ी को भेंट किया। संचेती परिवार भूखंड के सारे कागजात लेकर बिजयनगर में बिराजमान पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पहुँचा और उनकी प्रेरणा से पेढी को भूखंड समर्पिति किया। पेढ़ी के माननीय संरक्षक श्री मोहनचंदजी सा. ढड्ढा के कुशल संयोजनत्व में यह कार्य संपन्न होगा।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय **श्री मनोज्ञसागरजी म.** ठाणा 2 थोभ पधारे। वहाँ जिनमंदिर निर्माण का निर्णय हुआ। बालोतरा होली के अवसर पर बाडमेर श्री संघ में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर मूंगड़ा पधारे। शिलान्यास के संपन्नता के पश्चात् ब्रह्मसर पधारेंगे। वहाँ से फलोदी होते हुए बीकानेर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में रेल दादावाड़ी परिसर में नवनिर्मित शिखरबद्ध जिनमंदिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूज्य मुनिराज **श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., मनीषप्रभसागरजी म.** पालीताना श्री जिन हरि-विहार में बिराजमान है। वहाँ से 11 मार्च के आस-पास विहार कर अहमदाबाद होते हुए सूरत पधारेंगे।

पूज्य मुनिराज **श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म.** अहमदाबाद शाहीबाग जैन श्वे. खरतरगच्छ उपाश्रय में बिराजमान है। पू. मयंकप्रभसागरजी म. की पिछले दिनों ओपन हार्ट सर्जरी (बायपास) हुआ। वे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पू. गणि **श्री मणिरत्नसागरजी म.** नई दिल्ली छोटी दादावाड़ी में बिराजमान है।

पू. प्रवर्त्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा जयपुर में बिराज रहे हैं। उनकी प्रेरणा से कटला मंदिर का जीर्णोद्धार संपन्न हो रहा है, जिसकी प्रतिष्ठा 19 अप्रेल 2018 को होगा।

पू. गणिनी प्रवरा **श्री सुलोचना श्रीजी म. सुलक्षणा श्रीजी म.** आदि ठाणा चेन्नई से कम्पली की ओर विहार कर रहे हैं जहाँ उनकी निश्रा में 30 अप्रेल 18 को कुमारी भावना चौपड़ा की भागवती दीक्षा होगी।

पू. गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. पूर्णप्रभा श्रीजी म.** आदि ठाणा नदुंरबार बिराज रहे हैं। वहाँ से सूरत की ओर विहार करेंगे।

पू. मंडल प्रमुखा **श्री मनोरंजना श्रीजी म.** आदि ठाणा बकेला तीर्थ (छ.ग.) में बिराजमान है।

पू. माताजी म. **श्री रतनमाला श्रीजी म.** पू. बहिन म. **डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.** आदि ठाणा बिजयनगर प्रतिष्ठा के पश्चात् चित्तौड़, निम्बाहेडा, मंगलवाड़ की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 मुंबई से विहारकर बडौदा पधार गये हैं, वहाँ से केशरियाजी होते हुए जयपुर पधार रहे हैं।

पू. साध्वी **श्री विमलप्रभा श्रीजी म.** आदि ठाणा ने बालोतरा से जोधपुर की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी **श्री कल्पलता श्रीजी म.** आदि ठाणा पाली बिराज रहे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री सौम्यगुणा श्रीजी म.** आदि ठाणा ने पाटण से जयपुर की ओर विहार किया है। वे 8 मार्च तक पाली पहुँचेंगे।

पू. साध्वी **श्री हेमरत्ना श्रीजी म.** आदि ठाणा 3 नाकोड़ाजी तीर्थ पर बिराजमान है।

पू. साध्वी **श्री विश्वरत्ना श्रीजी म.** आदि ठाणा 3 बालोतरा से बाड़मेर की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी **श्री विनीतयशा श्रीजी म.** अर्हम् निधि श्रीजी म. ठाणा 4 ने बालोतरा से बाड़मेर की ओर विहार किया है। वहाँ उनकी निश्रा में चैत्र मास की

शाश्वत ओलीजी की आराधना होगी।

पू. साध्वी **श्री अनंतदर्शना श्रीजी म.** आदि ठाणा 5 जोधपुर से जयपुर की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी **श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म.** आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार कर केशरियाजी पधारेंगे, जहाँ बालिकाओं के शिविर का आयोजन होगा।

बाबूलालजी भंसाली बध्यक्ष बने

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ बैंगलोर की साधारण सभा में श्रीमान् बाबूलालजी भंसाली को आगामी कार्यक्रम हेतु सर्व सहमति से अध्यक्ष घोषित किया जिन्होंने अपनी कार्य समिति की घोषणा की।

श्री बाबूलाल भंसाली अध्यक्ष, श्री तनसुखराज जी गुलेच्छा उपाध्यक्ष, श्री लाभचंदजी मेहता उपाध्यक्ष, श्री अरविन्द कोठारी महामंत्री, श्री गजेन्द्रजी संकलेचा सहमंत्री, श्री नंदुभाई पारख कोषाध्यक्ष चुने गये।

जिसमें श्री तेजराजजी मालाणी, श्री अशोकजी चौपड़ा, श्री अनिलजी भड़कतिया, श्री राकेश डाकलिया, श्री प्रवीणजी रांका, श्री भरतजी रांका, श्री आंनदजी श्री श्रीमाल, श्री कैलाश संकलेचा, श्री प्रकाशजी चौपड़ा, श्री गोतमजी कोठारी, श्री विकासजी खटोड़ , श्री वीरचन्दजी चौपड़ा, श्री जितेन्द्र कवाड़, श्री पृथ्वीराजजी श्री श्रीमाल, श्री रंजीत कुमार मेहता, श्री सुरेश कुमार गुलेच्छा, श्री जैन श्वे खरतरगच्छ संघ द्वारा कार्यकाल हेतु महत्वपूर्ण योजनाऐं बनाई है जिसे मंत्री अरविन्द कोठारी ने प्रस्तुत की।

मालपुरा में होली मेला संपन्न

तेजमल प्रकाशचन्द अरविन्द कुमार ताराचन्द लोढ़ा द्वारा मालपुरा में भराया गया कुशल दादा होली मेला भक्ति और श्रद्धा का पर्याय बन गया। गत गुरुवार को शाम 8 बजे भक्ति संध्या का शुभारम्भ हुआ। प्रारम्भ में श्री प्राज्ञ पब्लिक स्कूल के नन्हे बच्चों ने भजनों की शानदार प्रस्तुति दी।

इसके बाद लोढ़ा परिवार के भाणेज मास्टर संयम नाबेड़ा के शानदार भजनों के समां बांध दिया। शुक्रवार को प्रातः लोढ़ा परिवार के समस्त सदस्य गाजे-बाजे के साथ नृत्य करते हुए सभी पुरुष, व महिला एक ही तरह की पूजा की ड्रेस में मंदिर पहुंचे और वहां पूजा-पाठ कराया। मेले में आवास, भोजन, अल्पाहार की व्यवस्था अभूतपूर्व रही।

श्री गोलेच्छाजी अध्यक्ष चुने गये

आगामी 3 वर्षो के लिए धमतरी सकल जैन श्री संघ का चुनाव संम्पन्न हुआ, जिसमें परम गुरु भक्त विजयजी गोलछा को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। समाज के प्रति समर्पित विजयजी के अध्यक्ष चुने जाने से पूरे समाज मे हर्ष व्याप्त है, वहीं विजय जी का प्रथम दायित्व महावीर जयंती सफलता पूर्वक संपन्न कराने की है।

चैत्र मास की ओली बाडमेर में

बाड़मेर नगर की धन्य धरा पर श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन में चैत्र मास की शाश्वत ओली पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुयायिनी पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री गुरुवर्याश्री हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री कल्पलता श्रीजी म. की निश्रावर्ती पू. साध्वी श्री विनीतयशा श्रीजी म. पू. साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

बाड़मेर खरतरगच्छ संघ की विनंती स्वीकार कर खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत ने यह आज्ञा प्रदान की। जिससे बाडमेर खरतरगच्छ श्री संघ में हर्ष की लहर छा गई।

निवेदन

खरतरगच्छ संघ चातुर्मास समिति, बाड़मेर

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर की शादी होनी थी। अभी सगाई भी नहीं हुई थी। पर जटाशंकर शादी के सपने देखने लगा था। एक बार वह अपने दोस्त घटाशंकर के पास बैठा था। जटाशंकर विवाह के बारे में ही उससे चर्चा कर रहा था।

घटाशंकर ने कहा– ध्यान रखना! तुम ऐसी लडकी ही पसन्द करना हो, जो सुन्दर हो न हो, पर स्वभाव की अच्छी हो!

यह सुनकर जटाशंकर कल्पना में दौडने लगा।

उसने अपने मित्र से पूछा– कोई लडकी काली हो, कुरूप हो, स्वभाव भी अच्छा न हो तो ऐसी लडकी को क्या कहना चाहिये!

मित्र बोला– ऐसी लडकी को हिडिम्बा कहना चाहिये।

जटाशंकर ने दूसरा सवाल किया– लडकी गोरी हो, सुन्दर हो, सब काम जानती भी हो और करती भी हो, अपने पति की सेवा करने वाली हो, हर क्षण मुसकुराती हो, ऐसी लडकी को क्या कहना चाहिये!

घटाशंकर ने तुरन्त उत्तर दिया– ऐसी लडकी को सपना कहना चाहिये। क्योंकि यथार्थ में ऐसी मिलनी असंभव है।

यह संसार के अनुभव का चित्र है। फिर भी पता नहीं, लोगों का मन संसार के प्रति क्यों अनुरक्त हो जाता है। आत्म कल्याण के विचारों को प्राथमिकता दो और संपूर्ण रूप से धर्म से जुड़ कर अपनी आत्मा का कल्याण करो।

मूंगड़ा में जिन मंदिर बनेगा

बालोतरा के पास स्थित मूंगड़ा गाँव में श्री वासुपूज्य जिनमंदिर का निर्माण पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. की निश्रा में व प्रेरणा से होने जा रहा है। ता. 4 मार्च को खनन मुहूर्त्त व शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ।

श्री चित्रकूट तीर्थ (चित्तौड़) की तलहटी स्थित

याकिनी महत्तरा सूनु आचार्य श्री हरिभद्रसूरि स्मृति मंदिर परिषर में

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिन मंदिर के

भव्य

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को

भावभरा आमंत्रण

पावन निश्रा:

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पावन सान्निध्य

पूज्य माताजी म. **श्री रतनमालाश्रीजी म.**
पू. बहिन म. डॉ. **श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा** आदि ठाणा

शुभ मुहूर्त

प्रतिष्ठा- प्र. ज्येष्ठ वदि 6 रविवार ता. 6.5.2018

शोभायात्रा- प्र. ज्येष्ठ वदि पू. शनिवार ता. 5.5.2018

महोत्सव प्रारंभ- प्र. ज्येष्ठ वदि 9 गुरुवार ता 3.5.2018

सकल श्री संघ को इस प्राचीन तीर्थ भूमि पर पधारने का हार्दिक आग्रह है।

निवेदक
श्री हरिभद्रसूरि स्मृति मंदिर ट्रस्ट, पाडन पोल
चित्तौड़गढ (राज.)

संपर्क सूत्र – जीवराज खरोड- 9214941749, शांतिलाल राठोड - 98292 46215, राकेश कुमार जैन - 94141 10323

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

|| श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः || || श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथाय नमः || || श्री महावीर स्वामी ने नमः ||

|| श्री मुनिसुव्रत स्वामी ने नमः || || अनन्तलब्धिनिधाय श्री गौतम स्वामिने नमः || || श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः ||

|| दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

श्री निम्बाहेड़ा नगरे

135 वर्ष प्राचीन श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी परिसर में

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनमन्दिर एवं दादावाड़ी की

भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्ते

सकल श्री संघ को भाव-भरा आत्मिक आमंत्रण

पावन निश्राः पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति
आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा

प्रेरणा : पूजनीया बहिन म.सा.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा

महोत्सव प्रारंभ
प्रथम ज्येष्ठ बदी 7 सोमवार
दिनांक 7 मई 2018

भव्य वरघोड़ा
प्रथम ज्येष्ठ बदी 8 मंगलवार
दिनांक 8 मई 2018

प्रतिष्ठा शुभ दिवस
प्रथम ज्येष्ठ बदी 9 बुधवार
दिनांक 9 मई 2018

हृदय की अनन्त गहराईयों से साग्रह निवेदन है कि जिनमंदिर एवं दादावाड़ी जिर्णोद्धार,
प्रतिष्ठा के इन शुभ पलों के साक्षी बनकर,
अपने शुभ भावों से पुण्य संचय करने के सुअवसर को
अपने आगमन से अवश्य बधाएँ। जिन शासन की शोभा में अभिवृद्धि करें।

निवेदकः

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजन खरतरगच्छ संस्थान (संघ)

दादावाड़ी रोड, आमलिया बावजी के सामने, निम्बाहेड़ा (राज.) जिला-चित्तौड़गढ़- 312601

मो. अखिलेश जैन 9414858241, कमल कुमार डागा 9829629415, हस्तीमल डागा 9829749802, रंगलाल भडकत्या 9166661217

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408